www.thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 17 नवम्बर 2013 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार 17 नवम्बर, 2013 से 23 नवम्बर 2013

कार्तिक शु. –15 ● वि० सं०–2070 ● वर्ष 78, अंक 82, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 190 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,114 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

हवन में भाग लेकर ब्रिटिश मेहमान वैदिक संस्कृति का हिस्सा बने

ब्रिटिश काउंसिल की ओर से स्कूलों के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित पुरस्कार 'अंतर्राष्ट्रीय स्कूल अवार्ड' का आयोजन किया जाता है, जिसमें विभिन्न गतिविधियों को आयोजन करते हुए विश्व के विभिन्न देशों के स्कूलों के साथ इन गतिविधियों का साँझा किया जाता है। डीआरवी डीएवी सेंटेनरी सीनियर सेकेंडरी पब्लिक स्कूल फिल्लौर ने इस में भाग लेते हुए कई गतिविधियों का आयोजन किया तथा इस प्रतिष्ठित पुरस्कार को प्राप्त किया। उसी श्रेणी में आगे बढ़ते हुए ब्रिटिश काउंसिल के अंतर्गत 'कनेक्टिंग क्लासरुम' की ओर से विद्यालय ने 15000 पाउंड की ग्रांट राशी प्राप्त की। इसके अंतर्गत लंदन के एक प्राइमरी स्कूल के छः शिक्षक इस स्कूल की कार्यशैली देखने डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल फिल्लौर में आये। यहाँ कक्षाओं के बच्चों के बीच रहकर उनकी गतिविधियों एवं शिक्षा विधि को नजदीक से देखा व समझा। इसके अतिरिक्त भारतीय वैदिक संस्कृति के अभिन्न अंग हवन में भी भाग लिया तथा अन्य त्योहारों की जानकारी प्राप्त की। उन्होंने हवन से संबंधित जानकारी प्राप्त करने में विशेष रुचि दिखाई। उन्होंने कहा कि हवन में भाग लेने की पवित्र भावना उनके साथ सदा रहेगी। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री योगेश गंभीर भी इस एक्सचेंज प्रोग्राम के तहत इंगलैंड जाएँगे। इससे दोनों देशों की शिक्षा एवं संस्कृति से जुड़ने एवं जानने का मौका दोनों देशों के अध्यापकों व विद्यार्थियों को मिलेगा जो भविष्य में अधिक सुनहरे अवसरों की राह खोलेगा। इस प्रकार डीएवी स्कूल फिल्लौर अंतर्राष्ट्रीय स्कूलों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हुए निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर है।

आर्य समाज. सदिया में (असम) हुआ देव यज्ञ

असम प्रांत के अन्तिम उत्तर–पूर्व सीमा पर अवस्थित आर्य समाज सदिया में विजय–दशमी पर्व का आयोजन किया गया। सर्व प्रथम आर्य समाज सदिया के सभी सदस्यों के साथ मंत्री श्री थानेश्वर नरह के नेतृत्व में देवयज्ञ सम्पन्न किया गया। यज्ञ में श्रद्धा के साथ वेदमंत्रों का उच्चारण करते हुए सभी ने आहुति प्रदान की। आर्य समाज के प्रधान श्री दिल बहादुर भटटराईजी ने कहा कि यज्ञ से मनुष्य का भौतिक और आध्यात्मिक विकास होता है और देव यज्ञ हर मनुष्य को करना चाहिए।

आमंत्रित मुख्य अतिथि श्री चेन्तिया और श्री प्रमोद नरहा जी ने भी यज्ञ में उपस्थित होकर अपना–अपना बहुमूल्य वक्तव्य प्रदान किया। इस हवन के सम्पन्न होने पर सभी ने संकल्प लिया कि अपनी जन्मभूमि आर्यावर्त का गौरव बढ़ाने और ऋषि ऋण से मुक्त होने के लिए हम सब जीवन भर आर्य समाज के दस नियमों का पालन करेंगे। शांतिपाठ से यज्ञ का समापन हुआ

दयानंद मॉडल स्कूल जालंधर में वैदिक ध्यान शिविर का हुआ आयोजन

दयानंद मॉडल स्कूल मॉडल टाउन जालंधर में महात्मा आनंद स्वामी का जन्मोत्सव तथा त्रि–दिवसीय वैदिक ध्यान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें विद्यालय के विद्यार्थियों तथा अध्यापकों ने श्रद्धा पूर्वक हिस्सा लिया।

इस शिविर में प्रसिद्ध वेद–ज्ञाता तथा प्रवक्ता श्री राजू वैज्ञानिक ने विद्यार्थियों को दो दिन संबोधित किया तथा उनकी अनेक जिज्ञासाओं को शांत किया। श्री राजू ने बताया महात्मा आनंद स्वामी का जीवन सदा ही आर्यजनों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत रहा है। उन्होंने महात्मा जी के जीवन की कुछ मुख्य घटनाओं पर प्रकाश डाला। इसी सन्दर्भ में बोलते हुए विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री विनोद कुमार जी ने बताया कि जीवन में एक उचित लक्ष्य निर्धारण के साथ साथ एक अच्छा इन्सान बनना भी अति आवश्यक है। जीवन में अच्छे चरित्र निर्माण व अच्छे आचार के लिए उन्होंने ध्यान की आवश्यकता पर बल दिया। इस शिविर में तीसरे दिन सभी अध्यापकों व विद्यालय के अन्य कर्मचारियों ने बड़े उत्साह से हिस्सा लिया।

शिविर के अंत में विद्यालय के प्रधानाचार्य ने जीवन में सदाचार व सुविचार अपनाने के लिए प्रेरित किया तथा श्री राजू वैज्ञानिक जी का धन्यवाद व आभार प्रकट किया।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – श्री पूनम सूरी

www.thearyasamaj.org

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार 17 नवम्बर, 2013 से 23 नवम्बर, 2013

दोनों हाथों से भर-भरकर दे

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

दिवो विष्ण उत वा पृथ्व्याः, महो विष्ण उरोरन्तरिक्षात्।
हस्तौ पृणस्व बहुभिर्वसव्यैः, आप्रयच्छ दाक्षिणादोत सव्यात्।।

अथर्व 7.26.8

ऋषिः **मेधातिथिः**। देवता **विष्णुः**। छन्दः **त्रिष्टुप्।**

● (**विष्णो**) हे सव्रव्यापक परमात्मन्! (**दिव**) द्युलोक से (**उत वा**) और (**पृथिव्याः**) पृथिवी–लोक से [तथा] (**विष्णो**) हे विश्वान्तर्यामिन्! यज्ञ के देव! (**महः**) महनीय (**उरोः**) विस्तीर्ण (**अन्तरिक्षात्**) अन्तरिक्ष–लोक से (**बहुभिः**)वहुत– से (**वसव्यैः**) ऐश्वर्य–समूहों से (**हस्तौ**) दोनों को (**पृणस्व**) भर ले। (**दक्षिणात्**) दाहिने हाथ से (**आ प्रयच्छ**) दान दे (**उत**) और (**सव्यात्**) बाएँ से [भी] (आ [**प्रयच्छ**]) दान दे।

● हे विष्णु! हे सर्वव्यापक! हे विश्वान्तर्यामिन्! हे विश्व–ब्रह्माण्ड के स्वामिन! तुम अपूर्व धनाधीश हो। विश्व के द्युलोक, अन्तरिक्ष–लोक और पृथिवी–लोक में जो धन बिखरा पड़ा है, वह सब तुम्हारा ही है। अतः तुम धन–कुबेर हो। एक और तुम धनपति हो ओर हम अकिंचन हैं। अतः हम चाहते हैं कि तुम अपने कोष में से दाहिने–बाएँ दोनों हाथों से भर–भरकर हमें दान दो। तुम्हारे रचे द्यु–लोक में प्रकाश का अनुपम पारावार भरा पड़ा है। वह प्रकाश तुम हमें भी प्रदान करो। तुम्हारे रचे विशाल अन्तरिक्ष–लोक में वायु और पर्जन्य का सागर उमड़ रहा है। उसमें से हमें भी प्राण–वायु और अमृतमय वृष्टि–जल प्रदान करो। तुम्हारे रचे पृथ्वी–लोक से सुवण, रजत, ताम्र अयस, हीरे, मोती आदि ऐश्वर्यों की निधियाँ भरी हुई हैं। वे ऐश्वर्य तुम हमें भी प्रदान करो। अल्प मात्रा में नहीं, प्रचुर मात्रा में प्रदान करो, क्योंकि हम ऐश्वर्यमय जीवन जीने की ही साध लिये हुए हैं।

पर हे विश्वव्यापी देव! हम केवल इन भौतिक ऐश्वर्यों का ही पाकर सन्तुष्ट नहीं हो जाना चाहते। हम शरीरस्थ द्यु–लोक, अन्तरिक्ष–लोक और पृथिवी–लोक के ऐश्वर्यों को भी पाने के लिए आतुर हो रहे हैं। हमारा अन्नमय कोश ही पृथिवी–लोक है, जिसमें शरीर की त्वचा से लेकर अस्थि–पर्यन्त सब ढ़ांचा आ जाती है। असका ऐश्वर्य है शारीरिक स्वास्थ्य और शारीरिक बल, जिसके बिना मनुष्य का जीवन–यापन,व्यान,उदान, समा, इन पांचों से तथा कर्मेन्द्रियों से मिलकर प्राणमय कोश बनता है। इसका ऐश्वर्य है प्रागण, अपानन आदि क्रियाओं का समुचित रूप से होते रहना तथा हस्त–पादादि कर्मेन्द्रियों को कार्य–क्षम बने रहना। मन और ज्ञानेन्द्रियों से मिलकर मनोमय कोश बनता है। इसका ऐश्वर्य है मन के माध्यम से ज्ञानेन्द्रियों का ज्ञान–प्राप्ति में सहायता होना तथा मन का सत्यसंकल्प करना। ज्ञानेन्द्रियों–सहित बुद्धि विज्ञानमयकोश कहलाता है। इसका ऐश्वर्य है ज्ञानेन्द्रियों से प्राप्त ज्ञान पर ऊहापोह करके निश्चयात्मक ज्ञान अर्जित करना। आनन्दमय कोश द्यु–लोक है, जहाँ हृदयपुरी में प्रतिष्ठित आत्मा के अन्दर ब्रह्म का वास है। इसका ऐश्वर्य है ब्रह्मानन्द की प्राप्ति। हे विष्णुदेव! तुम इन समस्त ऐश्वर्यों से भी भरपूर करने की कृपा करते रहो।

हे जगत्पिता! तुम निरैश्वर्य की अवस्था से पार करके हमें अधिकाधिक ऐश्वर्य प्रदान कर कृतार्थ करते रहो। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

तत्त्व-ज्ञान

● महात्मा आनन्द स्वामी

शरीर के तीन उपस्तम्भों पर चर्चा हो रही थी। आहार के महत्त्व, जिह्वा का स्वाद, भोजन में क्या हो, आहार में प्रज्ञा की भूमिका, गोघृत, मन की प्रसन्नता और भोजन के समय पर स्वर की बात करके आहार में छः रसों की बात आरम्भ की। चरक संहिता के आधार पर छः रसों में से कौन–कौन से तीन वात, पित्त और श्लेष्मा को पैदा करते हैं अथवा शान्त करते हैं चरक संहिता का उद्धरण देकर यह बताया।

आहार के बाद निद्रा को दूसरा उपस्तम्भ बताते हुए निद्रा के महत्व का प्रतिपादन किया। निद्रा से कैसे जीवन की बैटरी चार्ज होती है यह अपने अनुभव के आधार पर बताया। प्रभु की इस अद्भुत देन का मनुष्य ने कैसे लोभ और काम के वश में पढकर तिरस्कार किया है यह बताया। निद्रा का नाश क्यों होता है और सच्ची निद्रा कैसे आती है इस पर विचार किया।

अब बात शुरु हुई तीसरे उपस्तम्भ ब्रह्मचर्य की। ब्रह्म में विचरना (ब्रह्मचर्य) तभी संभव है जब मनुष्य शरीर के भौतिक लक्ष्य–वीर्य, को अपने वश में रखता है। धन्वन्तरि जी महाराज का उद्धरण देकर बताया कि वीर्य से ओज प्राप्त होता है। वीर्य शरीर का आधार स्तम्भ है और साथ ही आत्म दर्शन का भी।

ब्रह्मचर्य को एक यज्ञ बता रहे थे

अब आगे...

लोक परलोक सुधारने वाला यज्ञ

यज्ञ के द्वारा जहाँ इस लोक में अपने इस शरीर तथा अन्तःकरण को बलवान्, शुद्ध तथा पवित्र बनाया जा सकता है, वहीं यज्ञ ब्रह्मलोक में ले–जाने वाला है। इसका वर्णन 'शतपथ–ब्राह्मण' में आया है। जब जनक जी ने यज्ञ के सम्बन्ध में याज्ञवल्क्य जी से छः प्रश्न पूछे तो उन्होंने बड़े विस्तार से उनका उत्तर दिया। होम की हुई आहुतियाँ जिस प्रकार एक सूक्ष्म रूप धारण करके आकाश में प्रवेश करती हैं और वे वायु तथा उसमें स्थित जल को स्वच्छ तथा पुष्ट करती हैं, फिर वह जल मेघ के रूप में नीचे उतरता है जिससे औषध और अन्न उत्पन्न होता है, अन्न से वीर्य प्राप्त होता है। इसी प्रकार होम की हुई आहुतियाँ एक दूसरा अत्यन्त सूक्ष्म रूप धारण कर यज्ञ करने वाले के अन्तः करण में प्रवेश करती हैं। यह रूप वह है जो श्रद्धा–भक्तिपूर्ण विश्वास में यथाविधि आहुति देते समय एक आस्तिक व्यक्ति के चित्त पर उस कर्म के शुभ संस्कार पड़ते हैं। यही वह धर्म है जो मृत्यु के पीछे मनुष्य के साथ (सूक्ष्म शरीर में वासना बनकर) जाता है।

इस प्रकार यज्ञ की आहुतियों के दो रूप हो गए– एक जो सूक्ष्मरूप से आकार में प्रवेश करता है और दूसरा संस्कार–रूप से अन्तःकरण में। इनमें से आकाश सबका साझा है इसलिए आकाश में प्रविष्ट आहुतियाँ सबके लिए साझा फल देती हैं अर्थात् वृष्टि और पुष्टि। परन्तु अन्तःकरण तो सबका पृथक–पृथक है सो उसमें प्रविष्ट हुई आहुतियाँ, आहुतियाँ देनेवाले ही का परलोक सुधारती हैं।

जिस प्रकार यज्ञ की आहुतियाँ लोक–परलोक दोनों का सुधार करती हैं, उसी प्रकार शरीर का वीर्य भी लोक–परलोक दोनों को सुधारता है। इसलिए इसे यज्ञ का नाम दिया गया है। वीर्यवान् व्यक्ति सदा प्रसन्न रहेगा। उसे क्रोध नहीं आएगा। वह शरीर के हर अंग को स्वस्थ रख सकेगा। उसकी बुद्धि तीव्र होगी और वह कभी निराश नहीं होगा। परन्तु वीर्यहीन लोग सर्वदा रोगी रहेंगे; मुखमण्डल पर उदासीनता डेरा डाले बैठी रहेगी; ज़रा–ज़रा सी बात पर क्रुद्ध हो जाने का स्वभाव–सा बन जाएगा, चिड़चिड़ापन आ जाएगा, किसी भी कार्य में मन नहीं लगेगा।

गृहस्थ भी ब्रह्मचारी

गृहस्थ–आश्रम में जाने वाले महानुभाव शंका कर सकते हैं कि गृहस्थ किस प्रकार ब्रह्मचर्य–पालन कर सकता है? इसका उत्तर भगवान मनु ने पहले ही दे रखा है :

निन्द्यास्वष्टासु चान्यासु स्त्रियो रात्रिषु वर्जयन्।

www.thearyasamaj.org

ब्रह्मचार्ये व भवति यत्र तत्राश्रमे वसन्
।। मनु 3।50 ।।

'पहली निन्दित छः रात्रियाँ तथा दूसरी और आठ रात्रियाँ– कुल चौदह रात्रियों को छोड़कर जो पुरुष (महीने में) केवल दो रात्रि स्त्री प्रतिगमन करता है, वह ब्रह्मचारी ही माना जाता है।'

निन्दित छः रात्रियाँ वही हैं जब स्त्री रजस्वला होती है; और शास्त्र बताता है कि जब स्त्री मासिक धर्म में हो तो ऐसी अवस्था में जो पुरुष संसर्ग करता है वह अपने आपको भी और अपनी पत्नी को भी अनेक प्रकार की बीमारियों का शिकार बना देता है। इन रात्रियों के पश्चात भी फिर प्रतिपदा, षष्ठी, अष्टमी, एकादशी, द्वादशी, चतुर्दशी और पूर्णिमादि तिथियाँ हों तो आयुर्वेद ने इनको वर्जित बतलाया है। इस मर्यादानुसार मास में दो ही रात्रियाँ मिलती हैं। इसलिए मनु भगवान ने इस मर्यादा पर चलने वालों को ब्रह्मचारी ही कहा है। ऋषि याज्ञवल्य ने भी आदेश दिया है कि :

ऋतावृतौ स्वदारेषु संगतिर्या विधानतः।
ब्रह्मचर्यं तदेवोक्तं गृहस्थाश्रमवासिनाम्।।

'ऋतुकाल में अपनी धर्म–पत्नी से शास्त्र–आदेशानुसार केवल सन्तानार्थ समागम करने वाला पुरुष गृहस्थ में रहता हुआ भी ब्रह्मचारी है।'

गृहस्थ के लिए और भी कितने ही नियम हैं जिन पर कटिबद्ध होने से स्त्री–पुरुष दोनों ब्रह्मचर्य का लाभ कर सकते हैं। सनातन वैदिक संस्कृति में तो विवाह केवल पितृ–ऋण से उऋण होने के लिए है और हमारी संस्कृति ने विवाह को एक धार्मिक तथा पवित्र आश्रम बतलाया है; वर और कन्या एक–दूसरे को वरते हुए आत्म–समर्पण करते हैं और वेद–मन्त्रानुसार अपनी कान्ति, लक्ष्मी, महिमा तथा ज्ञान बढ़ाते हुए परमात्मा की कृपा के पात्र बनकर मोक्ष पाते हैं। परन्तु यह तभी हो सकता है जब स्त्री–पुरुष दोनों अपना धर्म–सम्बन्ध समझकर इन्द्रिय–संयमपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करें।

दो कफन तैयार

इस जीवन के तत्त्व 'ब्रह्मचर्य' के रहस्य को यूनान (ग्रीस) के महात्मा सुकरात (साक्रेटीज) ने भी समझा था। उनके जीवन में आता है कि एक बार स्त्री–पुरुष के सहवास के सम्बन्ध में एक शिष्य ने सुकरात से पूछाः

शिष्य – पुरुष को स्त्री–प्रसंग कितनी बार करना उचित है?

सुकरात – जीवनभर में केवल एक बार।

शिष्य – यदि इससे तृप्ति न हो सके तो?

सुकरात – तो प्रतिवर्ष एक बार।

शिष्य– यदि इससे भी सन्तुष्टि न हो तो?

सुकरात – फिर महीने में एक बार।

शिष्य – इससे भी मन न भरे तो?

सुकरात – तो महीने में दो बार कर ले, परन्तु मृत्यु शीघ्र आ जाएगी।

शिष्य – इतने पर भी इच्छा बनी रहे तब क्या करे?

सुकरात – फिर ऐसा करे कि पहले कफन लाकर घर में रख ले, फिर जो इच्छा हो करे।

इस तथ्य की बात में इतना ही बढ़ाना है कि एक नहीं, दो कफन मँगवाकर रख लेने चाहिए। यह निश्चित जानिए कि अपने–आपको सँभालकर रखा और लोक–परलोक, दोनों में सुख देने वाले वीर्यरत्न को जिसने व्यर्थ नहीं गँवाया, वह सदा प्रसन्नचित्त रहेगा, उसमें सामर्थ्य आएगी और वह हर क्षेत्र में विजयी होगा।

योग–दर्शन के साधन–पाद में ब्रह्मचर्य के गुण बतलाने के लिए लिखा हैः

ब्रह्मचर्यप्रतिष्ठायां वीर्यलाभः ।।38।।

'ब्रह्मचर्य की दृढ़ स्थिति हो जाने पर सामर्थ्य का लाभ होता है। नियमानुकूल ब्रह्मचर्य धारण करने वाले के मन, बुद्धि, इन्द्रिय और शरीर में अपूर्व शक्ति प्रकट हो जाती है।

सारे ही ऋषियों, मुनियों, तपस्वियों और योगियों तथा आयुर्वेद के विद्वानों ने ब्रह्मचर्य के गुण गाए हैं और इतिहास बतलाता है कि ब्रह्मचारी हनुमान जी ने शूरवीरता के वे कौतुक दिखलाए कि लाखों वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी सभ्य लोग उन्हें प्रणाम करते हैं। क्या आप नहीं जानते कि भारत–जैसा देश गुलामी की दलदल में कब फँसा? यह दुर्घटना तब घटी जब पृथ्वीराज संयोगिता के मोह में फँस गया। भारत के लिए वह दिन दुर्दिन था जिसने चिरकाल तक भारत को अन्य देशवासियों का दास बनाए रखा। जब देश पर आक्रमण करने वालों को पीछे धकेलने के लिए पृथ्वीराज रणक्षेत्र को चला तो चलने से पूर्व वह संयोगिता से रंगरेलियाँ मनाता रहा। जिस विदेशी को पृथ्वीराज 16 बार पराजित कर चुका था, उसी के सामने वीर्यहीन होकर स्वयं पराजित हो गया। उसी दिन से भारत की गुलामी शुरू हुई।

नैपोलियन जैसे योद्धा के सम्बन्ध में भी यही कहा जाता है कि जब उसके ह्रास का समय आया तो युद्ध पर जाने से पहले वह अपना खून स्वयं कर चुका था। ऐसी ही अभिमन्यु कुमार के सम्बन्ध में गाथा है कि वह चन्द्रमा के समान सुन्दर, सूर्य जैसा तेजस्वी युवक कुरुक्षेत्र के युद्ध स्थल में गया तो पहली रात वीर्य–दान देकर गया और मारा गया। ब्रह्मचर्य निस्सन्देह इहलोक में भी विजय कराता है और फिर परलोक में भी सफल बनाता है। इसीलिए आर्य ऋषियों ने मनुष्य–जीवन के चार भागों में से तीन भाग पूर्ण ब्रह्मचर्य में गुजारने का विधान बनाया और चौथे भाग गृहस्थ–आश्रम में केवल संसार–स्थिति के लिए ऋतु–अनुकूल नियमपूर्वक जीवन व्यतीत करने का कड़ा नियम रखा। इतना महत्त्वपूर्ण यह तीसरा उपस्तम्भ है जो शरीर को स्वस्थ बनाता है।

शरीर को स्वस्थ्य बनाए रखने के ये तीन मुख्य साधन आयुर्वेद ने बतलाए हैं – आहार, निद्रा, ब्रह्मचर्य। इन अनमोल रत्नों से लाभ उठाइए और जब शरीररूपी रथ ठीक अवस्था में हो, मानव–जीवन के उद्देश्य की ओर तीव्रता से अग्रसर होकर मंजिल पर पहुँच जाइए।

महर्षि दयानन्द विनोद प्रिय भी थे

● खुशहाल चन्द्र आर्य

महर्षि दयानन्द इतने बड़े त्यागी, तपस्वी संयासी होकर केवल गम्भीर ही नहीं थे बल्कि सभी रसों से परिपूर्ण थे। वे असहाय व निर्बल को देखकर करूणा भाव से भर जाते थे। देश की या किसी व्यक्ति की दयनीय दशा देखकर रात भर रोते थे। किसी दुष्ट या पापी को दण्ड देने के लिए क्रोधित इतने अधिक होते थे, उनको देखकर दुष्ट डर के मारे भयभीत होकर उनके पैरों में पड़कर क्षमा माँगते थे। उनका कण्ठ भी बड़ा मधुर था। मंत्रों को जब सस्वर बोलते थे या भजन गाते थे तो लोग झूमने लग जाते थे। इन सभी रसों का दिग्दर्शन उनके जीवन में पग–पग पर होता है। अन्य रसों के साथ–साथ उन्हें मनोरंजन करना भी प्रिय लगता था। यहाँ उनके जीवन की कुछ घटनाएँ लिख रहे हैं जिनसे उनके विनोदी स्वभाव का दिग्दर्शन होता है। वे इस प्रकार हैं–

1. यह घटना सन् 1867 की चासी ग्राम की है। पाण्डेय गंगा प्रसाद जी स्वामी जी के एक श्रद्धालु अनुयायी थे। जिस प्रकार स्वामी जी जाटों को, राजपूतों को, बनियों को यज्ञोपवीत देते थे, उनका अनुकरण करके गंगा प्रसाद जी भी उसी प्रकार गाँव–गाँव में विचरण करते हुए जनेऊ धारण कराते थे। उनके इस कार्य से स्वामी जी बहुत प्रसन्न थे। एक दिन, गंगा प्रसाद जी ने स्वामी–चरणों में उपस्थित होकर निवेदन किया कि महाराज! मैंने बहुत बड़ी जन–संख्या को जनेऊ धारण कराए हैं। स्वामी जी ने विनोद भाव से हँसते हुए कहा कि यज्ञोपवीत देते ही हो या किसी का उतारते भी हो? उसने विनती की–भगवन! कभी जनेऊ उतारा भी जाता है? स्वामी जी ने कहा– हाँ, जो जन धर्म–कर्म हीन हो जाए उसके उपवीत (जनेऊ) उतार लेने चाहिए।

2. उसी गाँव की घटना है कि पण्डित गंगा प्रसाद का गुरू प्रायः स्वामी जी के पास आया जाया करता था। एक दिन वह स्वामी जी की कुटिया पर अपने वस्त्र रख, गंगा तीर पर स्नानार्थ जाने लगा। स्वामी जी ने विस्मयाकार में पूछा कि आपकी भुजा में क्या है? वह बोला महाराज, यह ''अनन्त'' है। स्वामी जी झट उसके पास चले गए और उंगलियों से नापकर कहने लगे कि यह तो इतने अंगुल का है, अनन्त कहाँ है? उसने लज्जा के मारे यह अनन्त तुरन्त उतारकर गंगा में बहा दिया।

3. स्वामी जी चासी से अनूपशहर पधारे। वहाँ ठाकुर गिरवर सिंह चाँदौख–निवासी स्वामी जी की सेवा में आए। उस समय उनके पास नर्मदा से मँगवाये हुए गोल पिण्ड भी थे। वे उनका प्रतिदिन पूजन किया करते थे। ठाकुर महाशय ने स्वामी जी से पूछा कि क्या शिव पूजा अच्छी है? स्वामी जी ने उत्तर दिया कि इससे तो चींटियों की पूजा करना अच्छा है। क्योंकि जो नैवेद्य उस पर चढ़ाया जाता है उसे यह बटिया तो नहीं खा सकती परन्तु चिंटियों पर चढ़ाओगे तो वे अवश्य खा लेंगीं।

4. स्वामी जी महाराज पौष सुदी 6 सं0 1930 तद्नुसार सन् 1873 को अलीगढ़ में आए और राजा जय कृष्ण जी के अतिथि बने। महाराज का शुभागमन सुनकर सहस्रों नगर निवासी तथा आस–पास के गाँव के लोग उपदेश सुनने आने लगे। सारे नगर में स्वामी जी के प्रचार का प्रभाव था। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई सभी सत्संग में आते थे। व्याख्यान के पश्चात् शंका –समाधान भी होता था। उसमें रात के दस बजे जाया करते थे। स्वामी जी के इस अथक परिश्रम की सभी प्रशंसा करते थे। एक दिन, एक पण्डित मंदिर में चबूतरे के ऊँचे स्थान पर बैठ कर स्वामी जी से शास्त्रार्थ करने लगा। लोगों ने उसके ऊँचे स्थान पर बैठने को बुरा

शेष पृष्ठ 9 पर ☞

www.thearyasamaj.org

सहज-सरल क्रियायोग

● महात्मा ओम् मुनि वैदिक

मानव मात्र के कल्याण हेतु दयालु ऋषि पतंजलि जी महाराज ने योगदर्शन जैसे दिव्य ग्रन्थ की रचना की। योगदर्शन के समाधि पाद में उन्होंने समाहितचित्त वाले योग के उत्तम अधिकारियों के लिए योग का स्वरूप, उसके भेद और उसका फल सम्प्रज्ञात तथा असम्प्रज्ञात समाधि का विस्तार से वर्णन किया है। किन्तु जिनके चित्त विक्षिप्त हैं, सांसारिक वासनाओं तथा राग-द्वेष से कलुषित हैं, उनके लिए अभ्यास और वैराग्य का होना कठिन है, उनका चित्त भी शुद्ध होकर अभ्यास और वैराग्य को सम्पादन कर सके, इस अभिप्राय से चित्त की एकाग्रता के लिए तथा योग के अंगों में प्रवृत कराने से पूर्व चित्त शुद्धि का एक सरल और उपयोगी साधन पाद के प्रारम्भ में क्रियायोग बतलाते है।

''तपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि क्रियायोगः।''

अर्थात तप स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान को क्रियायोग कहा जाता है।

तप-जिस प्रकार अश्वविद्या में पारंगत कुशल सारथि नए चंचल घोड़ों को साधता है, उसी प्रकार शरीर, प्राण, इन्द्रियों और मन को उचित रीति और अभ्यास से वश में करने को तप कहते हैं। जिससे गर्मी-सर्दी, भूख-प्यास, सुख-दुख, हर्ष-शोक और मान-अपमान आदि सभी द्वन्द्वों की अवस्था में बिना विक्षेप के स्वस्थ शरीर और निर्मल अन्तःकरण के साथ योगामार्ग में प्रवृत्त रह सके। अतः योग साधकों को सर्वप्रथम तपरूप साधन का उपदेश किया गया है।

''तच्च चित्तप्रसादन-बाधामानमनेनाऽऽसेव्यमिति मन्यते।''

जो तप चित्त की प्रसन्नता का हेतु हो तथा शरीर इन्द्रियादि का पीड़ाकारक न हो, वही तप सेवनीय है।

जिस प्रकार अग्नि में तपाने से धातु का मल भस्म हो जाने पर उसमें स्वच्छता और चमक आ जाती है, इसी प्रकार तप की अग्नि में शरीर, इन्द्रियों आदि का तमोगुणी आवरण के नष्ट हो जाने पर उनका सत्वरूपी प्रकाश बढ़ जाता है। सात्विक आहार-विहारादि शरीर के तप माने गए हैं तथा प्रत्याहार और शम दम आदि इन्द्रियों तथा मन के तप हैं।

नात्यश्नतस्तु योगोऽस्ति न चैकान्तमनश्नतः।

न चातिस्वप्नशीलस्य जाग्रतो नैव चार्जुन।। गीता-6/16

यह योग न तो बहुत अधिक खाने वाले को और न कोरे उपवासी को वैसे ही न बहुत सोनेवाले को और न बहुत जागने वाले को प्राप्त होता है।

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेरूटस्य कर्मसु।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा।।

गीता-6/17

जो मनुष्य आहार-विहार में, दूसरे कर्मों में और सोन-जागने आदि में नियमित रहता है, उसका योग दुखनाशक होता है।

युक्ताहार (मिताहार)- स्निग्ध, मीठा, प्रिय आहार भूख के अनुसार कम मात्रा में प्रभु की प्रीति के लिए जो किया जाता है, वही मिताहार कहा जाता है। तामसी, राजसी, हिंसा से प्राप्त हुए तथा गरिष्ठ, वात-कफकारक, अतिउष्ण, खट्टे, चरपरे, बासी, अतिरूक्ष, सूखे हुए, रूखे, सड़े हुए, जूठे नशा करने वाले उत्तेजक, स्वास्थ्य के लिए हानिकारक पदार्थों को त्यागकर केवल शुद्ध, सात्विक हलके मधुर रसदार, ताजा स्वास्थ्यवर्धक, चित्तको प्रसन्न करने वाले पदार्थ जैसे दूध घृत, ताजे रसदार मीठे सात्विक फल, सात्विक अन्न सब्जी व फल भूख से कम मात्रा में लें।

युक्त विहार- लम्बी कठिन यात्रा न करना जिससे भजन-साधना में विघ्न न पड़े। आलसी बनकर बिल्कुल निठल्ला न बैठ जाए, बल्कि इतना चलना-फिरना व घूमना चाहिए जिससे शरीर स्वस्थ और चित्त प्रसन्न रहे और सफलतापूर्वक हो सके।

युक्त कर्म चेष्टा- नियमित रूप से कर्त्तव्य तथा नियत सत्कर्मों को नित्य करते रहना अर्थात् न इतना अधिक परिश्रम कि जिससे थकान उत्पन्न हो और न सर्वथा कर्त्तव्यहीन होकर आलसी बन जाना।

युक्तस्वप्नाबोध- रात्रि में सात घण्टे से अधिक न सोना जिससे तमोगुण न बढ़े और न चार घंटे से कम सोना जिससे साधना में नींद न सताये।

वाणी का तप- वाणी को संयम में रखना। केवल सत्य, प्रिय व आवश्यकतानुसार दूसरों से यथायोग्य सम्मानपूर्वक व्यवहार करते हुए वाणी से वचन निकालना। वाणी को संयम में रखते हुए सप्ताह में एक दिन मौनव्रत रखना प्रशस्त है। वाणी को संयम में रखने का यत्न किए बिना देखा-देखी मौन रखना मिथ्याचार है।

मन का तप- मन को संयम में रखना अर्थात् हिंसात्मक, क्लिष्ट भावनाओं तथा अपवित्र विचारों को मन से हटाते हुए अहिंसात्मक, अक्लिष्ट भावनाओं और शुद्ध विचारों को मन में धारण करना मन का तप है। इस प्रकार क्लिष्ट विचारों पर विजय प्राप्त करने के पश्चात् सब प्रकार के विचार भविष्य में संकल्प-विकल्प और भूतकाल की स्मृति से मन को शून्य करने का अभ्यास करना चाहिए।

स्वाध्याय - वेद-शास्त्रों, उपनिषद् आदि तथा योग और सांख्य आध्यात्म सम्बंधी विवेक ज्ञान उत्पन्न करने वाले सत् शास्त्रों का नियमपूर्वक अध्ययन और ओंकार सहित गायत्री आदि मंत्रों का जप स्वाध्याय कहलाता है। प्रतिदिन सोने से पूर्व अपने अच्छे-बुरे मन-वचन-कर्म से किए गए व्यवहार का अन्तःकरण में अवलोकन करना। अशुभ चिन्तन व कार्यों को त्यागना व कल्याणकारी शुभसंकल्पों को ग्रहण करना।

ओंकार सहित गायत्री जप- भगवान् मनु लिखते हैं-

ओंकारपूर्विकास्ति स्त्रो महाव्याहृतयोऽव्ययाः।

त्रिपदा चैव सावित्री विज्ञेयं ब्रह्मणो मुखम्।

अर्थात् तीन मात्रा वाले ओंकार-पूर्वक तीन महाव्याहृतियों और त्रिपदा सावित्री को ब्रह्म का मुख (द्वार) जानना चाहिए। गायत्री मन्त्र निम्न प्रकार से है-

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

अर्थात् सब प्राणियों के परम पिता-माता, ज्ञानरूप, प्रकाश के देने वाले देव के उस उपासना करने योग्य शुद्धस्वरूप का हम ध्यान करते हैं, जो हमारी बुद्धियों को ठीक मार्ग में प्रवृत करे।

बुद्धि और चित्त के पवित्र होने से सन्मार्ग की प्राप्ति, सस्कारों की निवृत्ति और जन्म, आयु और भोग से मुक्ति हो सकती है। गायत्री मंत्र में विशेष रूप से बुद्धि व चित्त की पवित्रता के लिए प्रार्थना की गई है।

गायत्र्यास्तु परे नास्ति शोधनं पापकर्मणाम्।
महाव्याहृतिसंयुक्तां प्रणवेन च संजपेत्।।
संवर्तस्मृति श्लोक-218

अर्थात् गायत्री से बढ़कर पाप कर्मो का शोधक दूसरा कुछ भी नहीं प्रणव (ओंकार) सहित तीन महाव्याहृतियों से युक्त गायत्री मंत्र का जप करना चाहिए।

ईश्वर प्रणिधान ईश्वर की विशेष भक्ति और शरीर, इन्द्रियों, मन व बुद्धि आदि सभी बाह्य व आन्तरिक कारणों, का उसके अर्थों की भावना मानसिक जप करना है।

कामतोऽकामतो वापि यत् करोमि शुभाशुभम्।
तत्सर्वं त्वयि सन्यस्तं त्वत्प्रयुक्तः करोम्यहम्।।

फलेच्छा से या निष्कामता से जो शुभाशुभ कर्म का मैं अनुष्ठान करता हूँ वह सब आप परमेश्वर के ही समर्पण करता हूँ, क्योंकि आप परमेश्वर से प्रेरित होकर ही मैं सब काम करता हूँ।

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत्।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम्।।

हे कुन्तीपुत्र अर्जुन! जो तुम करो, जो भक्षण करो, जो यज्ञ करो, अथवा जो दान करो और जो जप करो, वह सब परमेश्वर के ही अर्पण करो।

यहाँ यह ध्यान रखने की बात है जिस योगी ने अपने समस्त कार्य ईश्वर के समर्पण कर दिए हैं, उसका कोई काम अशुभ नही होगा। सब कार्य शुभ ही होंगे तथा फलों को ईश्वर-समर्पण कर देने के कारण उसके कर्म फलेच्छा परित्याग पूर्वक ही होगे। कर्म और उनके फलों को ईश्वर समर्पण कर देने का अर्थ कर्महीन बन जाना नहीं है।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि।।
गीता-2/24

हे अर्जुन! कर्मों के अनुष्ठान में तुम्हें अधिकार है, कर्मो के फल में कदापि नहीं, अतः फल के अर्थ कर्मों का अनुष्ठान मत करो और कर्महीनता में भी तेरी आसक्ति न हो अर्थात् ईश्वर-समर्पण करके सदा निष्कामभाव से अपने कर्त्तव्यरूपी शुभ कर्मों को करते रहना चाहिए।

इसलिए अविद्या आदि क्लेशों को शिथिल करने के पश्चात् और चित्त को समाधि की प्राप्ति के योग्य बनाने हेतु क्रियायोग किया जाता है। 'तप' से शरीर, प्राण, इन्द्रिय और मन की अशुद्धि दूर होने पर वे स्वच्छ होकर क्लेशों को दूर करने और समाधि प्राप्ति में सहायक होते हैं। 'स्वाध्याय' से अन्तःकरण शुद्ध होकर समाहित होने की योग्यता प्राप्त कर लेता है। 'ईश्वरप्रणिधान' से समाधि सिद्ध होती है और क्लेशों की निवृत्ति होती है।

भाव यह है कि क्रियायोग द्वारा क्लेशों को दूर करना चाहिए। क्लेशों के शिथिल होने पर अभ्यास-वैराग्य का सुगमता से संपादन हो सकेगा। अभ्यास-वैरागय से क्रम प्राप्त सम्प्रज्ञात-समाधि की सबसे ऊँची अवस्था विवेक-ख्यातिरूप अग्नि से सूक्ष्म किए हुए होने पर वैराग्य उत्पन्न होता है। वैराग्य के संस्कारों की वृद्धि से चित्त का विवेकख्याति अधिकार भी समाप्त हो जाता है और असम्प्रज्ञात समाधि का लाभ प्राप्त होता है। इत्योम् शम्।

भक्ति साधन आश्रम आर्यनगर, रोहतक (हरियाणा)

www.thearyasamaj.org

गुजराती लेखकों की आर्य साहित्य को देन

● डा. भवानी लाल भारतीय

ऋषि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना उस बम्बई महानगर में की थी जहाँ प्रधानता चाहे मराठी–गुजराती समुदाय की थी किन्तु यहाँ दक्षिणात्य तथा उत्तर भारतीय (राजस्थान, उत्तर प्रदेश आदि) लोग भी पर्याप्त संख्या में रहते थे। यद्यपि गुजरात की भाषा गुजराती है तथापि एक ही परिवार और पड़ोस के प्रान्त की भाषा होने के कारण गुजरातवासियों का हिन्दी से पर्याप्त परिचय सदा से रहा है। यद्यपि आर्यसमाज का पर्याप्त साहित्य हिन्दी में लिखा गया किन्तु गुजराती, मराठी तथा बंगला आदि आर्य भाषाओं में भी पर्याप्त आर्य साहित्य लिखा गया है। यहाँ हम मुख्यतः उस साहित्य की चर्चा करेंगे जो गुजरात मूल के लेखकों ने गुजराती तथा हिन्दी में लिखा है।

स्वामी दयानन्द का बम्बई प्रान्त में, पर्याप्त समय तक निवास का परिणाम निकलना स्वाभाविक ही था। महाराष्ट्र तथा गुजरात के अनेक नगरों में आर्यसमाज स्थापित हुए तथा पर्याप्त लोगों ने आर्यधर्म स्वीकार किया। गुजरात (खरसाड़ निवासी) के पं. कृष्णराम इच्छाराम महाराज के इस प्रदेश में भ्रमण के दौरान पर्याप्त कार्य तक उनके साथ सहायक के रूप में रहे। उनके गुजराती में दिए एक व्याख्यान 'आर्यो जागृत हो' का हिन्दी अनुवाद 1898 में प्रकाशित हुआ था। स्वामी जी के विख्यात शिष्य, संस्कृत के पदपण्डित पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा यद्यपि भारत तथा यूरोप में मुख्यतः राजनैतिक गति विधियों में संलग्न रहे किन्तु उनका अध्ययन विशाल था। पं. श्याम जी ने प्राच्य विद्या परिषद के पाँचवें बर्लिन अधिवेशन में संस्कृतः एक जीवित भाषा विषय पर प्रभावशाली पत्रवाचन किया। इसके हिन्दी और उर्दू अनुवाद (प्राचीन भारत में फने तहरीर) भारत में छपे। गुजरात में अधिक प्रचलित स्वामी नारायण सम्प्रदाय के मुख्य ग्रन्थ शिक्षा पत्री पर 'शिक्षा पत्रीध्वान्त निवारण' नामक खण्डनात्मक ग्रन्थ स्वामी जी ने लिखा तो इसका गुजराती अनुवाद पं. श्यामजी ने किया था। उनके साले रामदास छबीलदास बैरिस्टर (छबीलदास लल्लू भाई के पुत्र) ने श्यामजी की भाँति बम्बई में बालकेश्वर निवास के समय स्वामी जी संस्कृत का अध्ययन किया था। इंग्लैण्ड में रहकर उन्होंने बैरिस्टरी की परीक्षा उत्तीर्ण की। वे संस्कृत के व्युत्पन्न कवि थे। ऋषि के निधन पर श्रद्धांजलि रुप में उन्होंने उत्कृष्ट 21 श्लोक लिखे। ये ऋषि के अनेक जीवनचरितों में दिए गए हैं। उन्होंने पद्मिनी नाम से एक चम्पू काव्य (गद्य पद्य का मिश्रण) भी लिखा था।

सेवकलाल कृष्णदास बम्बई आर्य समाज के वर्षों तक मंत्री रहे थे। आर्य समाज बम्बई के प्रथम पंजीकृत सदस्यों में उनका नाम संख्या 92 पर अंकित है। जब ऋषि सत्यार्थप्रकाश का बारहवाँ जैन मत विषयक समुल्लास लिख रहे थे तो सेवकलाल ने ही उन्हें जैन मत के ये ग्रन्थ उपलब्ध कराए जो प्रायः अप्राप्य थे। उन्होंने अथर्ववेद संहिता का सम्पादित संस्करण तैयार किया जो सत्यनारायण प्रेस बम्बई से 1884 में छपा। पं. मोहनलाल विष्णुलाल पाण्ड्या मूलतः गुजराती थे, किन्तु उनका जन्म मथुरा में हुआ था। वे उदयपुर राज्य में उच्च अधिकारी थे। स्वामी जी ने उन्हें स्वस्थापित परोपकारिणी सभा का सदस्य बनाया था। उनके द्वारा आर्यसमाज के दस नियमों की हिन्दी अंग्रेजी व्याख्या लिखी गई है। उनके लिखे कतिपय अन्य ग्रन्थों (आर्य सिद्धान्त मार्तण्ड, ओंकार व्याख्यान आदि) के नाम भी मिलते हैं। विशद सूची देखें– आर्य लेखक कोशः डा. भारतीय पृ. 206 सेठ दामोदरदास सुन्दरदास आर्यसमाज के प्रारम्भिक सदस्य थे। उनका लिखा मुम्बई आर्यसमाज का इतिहास (1989 वि. में प्रकाशित) बम्बई में आर्य समाज की प्रारम्भिक गतिविधियों पर पर्याप्त प्रकाश डालता है। यह अब दुर्लभ ग्रन्थों की श्रेणी में है।

स्वामी जी ने जब बम्बई प्रकाश में बल्लभ सम्प्रदाय तथा पुष्टि मार्ग का प्रबल खण्डन किया तो वहाँ के कई भाटिया, लोग जो इस सम्प्रदाय के अनुयायी थे, वैदिक धर्म को अंगीकार करने लगे। इनमें दामोदर हरिदास का नाम मुख्य है। पर्याप्त समय तक पुष्टिमार्ग में रहने के कारण वे इस सम्प्रदाय के पाखण्डों से भली भाँति परिचित थे। आर्यसमाज बन जाने पर उन्होंने पुष्टिमार्ग के खण्डन में एक बृहद् ग्रन्थ गुजराती में लिखा। राँची आर्यसमाज से मैं इसकी एक दुर्लभ प्रति प्राप्त कर सका था। बम्बई में रहते समय स्वामी जी का जिन सनातनी पण्डितों से शास्त्रार्थ विषयक पत्र व्यवहार होता था, वे मूल पत्र भी इस ग्रन्थ में हैं। मैंने इन्हें वेदवाणी के एक दयानन्द विशेषांक में अनूदित कर प्रकाशित कराया था।

गुजराती लेखकों में उच्चकोटि के शास्त्रज्ञ पंडित भी थे। पं. गयाशंकर शर्मा (1887–1969) दर्शनाचार्य थे। उनका जन्म सौराष्ट्र के लाठी कस्बे में हुआ। उन्होंने ऋषि दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश, संस्कारविधि तथा गोकरूणा निधि का........ अनुवाद किया। उनकी सबसे बड़ी देन षड्दर्शनों की गुजराती टीका है। मीमांसा दर्शन जैसे क्लिष्ट दर्शन की धारावादी व्याख्या उन्होंने की है। पं. महाराजी शंकर शर्मा (1887–1939) जूनागढ़ के निवासी थे। उन्होंने आर्य साहित्य के लेखन के अतिरिक्त गुजराती नाटक कम्पनियों के लिए कथा लेखन तथा संवाद लेखन भी किया। उनकी कन्योपनयन विधि प्रसिद्ध रचना है जिसमें स्त्रियों के उपनयन संस्कार की शास्त्रीयता को सिद्ध किया गया है। यह एक सनातनी पण्डित वीरभानु शर्मा की पुस्तक कन्योपनयन निधि के उत्तर में लिखी गई थी। विजय शंकर मूलशंकर जानी मूलतः जूनागढ़ राज्य के एक गाँव के थे। 1897 में उनका जन्म हुआ और प्रमुख कार्यक्षेत्र बम्बई रहा। उनके प्रयास से पं. अयोध्या प्रसाद को विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लेने के लिए अमेरिका के शिकागो नगर में भेजा गया। स्वामी दयानन्द के जन्म स्थान तथा उनके परिवार विषयक तथ्यों को जुटाने में उन्होंने बहुत श्रम किया था। फलस्वरूप दयानन्द जन्म स्थान निर्णय जैसे ऐतिहासिक तथ्यों से परिपूर्ण ग्रन्थ उन्होंने लिखा। उनके दार्शनिक ग्रन्थ भी उल्लेखनीय हैं– जगत् के उपादान कारण की समीक्षा (1955) तथा फिलोस्फी ऑफ क्रिएशन (1964) उनकी प्रसिद्ध दार्शनिक रचनाएँ हैं।

अब कुछ अन्य गुजराती लेखकों के लेखन कार्य की चर्चा करें। नारी लेखकों में चंचलबेन माणेकलाल पाठक ने ऋषि दयानन्द की जन्मस्थली टंकारा को ही अपनी कर्मस्थली बनाया। 1889 में जन्मी चंचल बेन निधन 1964 में टंकारा में ही हुआ। उनकी दार्शनिक कृति अगम्य पंच के यात्री का आत्मदर्शन एक महत्त्वपूर्ण रचना है। अन्य उल्लेखयोग्य ग्रन्थ हैं– आदर्श जीवन, आपसी विचार सरणि तथा धर्म नुस्वरूप अणे जीवन साथे सम्बन्ध। चन्द्रकान्त वेद वाचस्पति (1909–1952) गुरूकुल काँगड़ी के स्नातक थे तथा गुरूकुल सोनगढ़ के आचार्य पद पर रहे। उन्होंने वेद वाचस्पति उपाधि के लिए शोधग्रन्थ लिखा वह 'वेदमंत्रों के यौगिक अर्थ' विषय पर था, परन्तु प्रकाशित नहीं हो सका। चन्द्रशंकर नर्मदाशंकर पण्ड्या को इस बात का श्रेय है कि उन्होंने पं. गुरूदत्त विद्यार्थी की जीवनी गुजराती में लिखी। इसका प्रकाशन 1914 में हुआ। इसमें पं. गुरूदत्त के लेखों का सार भी है। जीवनलाल श्याम जी राठौड़ का जन्म भावनगर में 1917 में हुआ। आपने ऋषि दयानन्द का जीवन चरित गुजराती में लिखा जो 1967 में छपा। इसके अतिरिक्त अपने लाला लाजपतराय की जीवनी भी लिखी। वे लेखक, कवि और पत्रकार भी थे।

वर्तमान गुजराती लेखकों में वैद्य दयाल जी परमार का नाम महत्त्वपूर्ण है। ये मूलतः टंकारा के निवासी हैं (जन्म 1934) इन्होंने आयुर्वेद का विशद अध्ययन किया है तथा जामनगर के आयुर्वेद महाविद्यालय में प्राध्यापक रहे हैं। आपने ऋषि दयानन्द के अनेक ग्रन्थों का गुजराती में अनुवाद किया है– ऋषि कृत वेद भाषा आंशिक उपदेश मंजरी तथा ऋषि दयानन्द की आत्मकथा/ऋषि जीवन विषयक अन्वेषण में आपकी गहरी रूचि है। जब मेरा ग्रन्थ नवजागरण के पुरोधा 1983 में प्रकाशित हुआ तो उसमें ऋषि के गृहत्याग तथा बाद के उनके भ्रमण विषयक अनेक तथ्यों पर आपने मुझे जानकारी दी। उनकी एतद्विषयक लेखमाला वेदवाणी (1986) तथा आर्यजगत में छपी। आपके अन्य अनेक ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं।

सूरत में 1901 में जन्मे दिनेश नर्मदा शंकर त्रिवेदी ने स्वभाषा में स्वामी श्रद्धानन्द का एक श्रेष्ठ जीवनचरित लिखा है। गुरूकुल काँगड़ी में प्रविष्ट होने वाले ये प्रथम गुजराती छात्र थे।

डा. दिलीप विद्यालंकार (जन्म 1936) आणंद जिले के मोगर ग्राम में हुआ। 1960 में गुरूकुल काँगड़ी से वेदालंकार की उपाधि प्राप्त की तथा दिल्ली विश्वविद्यालय से वेदों में मानववाद विषय पर शोध प्रबंध लिखकर पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ौदा में संस्कृत के प्राध्यापक रहे। दो वर्ष पूर्व आपका निधन शिकागो (यू.एस.ए.) में हो गया। आपने सत्यार्थ प्रकाश के गुर्जर अनुवाद का संशोधन एवं परिष्कार का श्रम साध्य कार्य किया। यह संशोधित गुजराती अनुवाद 1975 में प्रकाशित हुआ है। गायत्री रहस्य, दयानन्द वाणी, दयानन्द चरित आदि आपकी अन्य रचनाएँ हैं।

न केवल गद्य लेखकों ने ऋषि दयानन्द तथा आर्य समाज पर अपनी कलम चलाई अपितु गुर्जर कवियों ने ऋषि की यशोगाथा का गान काव्य की रीति से किया। एक ऐसे ही कवि थे दुलेराम काराणी। 1896 में कच्छ के मुन्द्रा में जन्मे दुलेराम की शिक्षा मैट्रिक तक हुई। कच्छ राज्य के शिक्षा विभाग में कार्य करने के पश्चात् वे अहमदाबाद में रहे। 26 फरवरी 1989 को उनका निधन हो गया। उन्होंने दयानन्द बावनी शीर्षक से 52 ललित कवित्त छन्द में

शेष पृष्ठ 9 पर ☞

www.thearyasamaj.org

गुरु विरजानन्द

● रामदास 'सेवक'

(पिछले अंक से आगे)

मथुरा में विभिन्न स्थानों पर निवास – दण्डी जी मथुरा आकर सर्वप्रथम गूजरमल की कोठी में रहे। यहाँ सब बातों का आराम था–परन्तु यमुना कुछ दूर पड़ती थी। दण्डी जी यहाँ दो महीने से अधिक नहीं ठहरे।

गतश्रम नारायण मन्दिर के व्यवस्थापक **प्रसादी लाल आचार्य** के अनुरोध पर उस मंदिर में चले गए। इस मन्दिर में पाठशाला खोल दी गई जो दो महीने चली। प्रसादी लाल के 18 वर्षीय पुत्र वासुदेव ने इन्हीं दिनों दण्डी जी से पढ़ना प्रारम्भ किया। दण्डी जी के आशीर्वाद से वह (वासुदेव) शीघ्र ही महान् पण्डित हो गया।

रत्नों के अद्भुत पारखी – एक दिन एक स्वर्णकार नयन सुख जड़िया गतश्रम नारायण मन्दिर में दण्डी जी के पास आया और अपना परिचय देकर बोला, ''आप की बहुत महिमा सुनी है। आप के पधारने से मथुरा के शुभ दिन आ गए'' दण्डी जी ने विनोद में कहा, ''नयन सुख! तुम्हारी और मेरी क्या तुलना? तुम नयन सुख और मैं नेत्रहीन! तुम बड़े जौहरी भी हो। तुम्हारे यहाँ रहने से मथुरा के दिन नहीं बदले, तो मेरे यहाँ निवास से क्या होगा? '' तभी नयन सुख ने कहा, ''महाराज! सलोक तो मुझे याद नहीं पर भावार्थ यह है–राजा लोग दूतों से देखते हैं, पण्डित वेद से देखते हैं, गाएँ नाक से सूंघ कर देखती हैं– सामान्य जन चर्म–चक्षुओं से देखते हैं–फिर भी वे नहीं देख सकते जो आप देखते हैं।'' दण्डी जी ने कहा, **'सलोक'** नहीं **श्लोक** कहा करो। शुद्ध उच्चारण किया करो–वह श्लोक इस प्रकार है।

''चारैः पश्यन्ति राजानो, वेदैः पश्यन्ति पण्डिताः।
गावो घ्राणेन पश्यन्ति, चक्षुभ्याम् इतरे जनाः।।''

इस प्रकार दोनों में परिचय एवं प्यार हो गया।

दूसरे दिन नयनसुख पुनः उपस्थित हो गया– बोला–दास हाजिर है। दण्डी जी ने कहा, ''**दास** मत कहा करो। बताओ क्या सुनना चाहते हो?''

नयनसुख– महाराज! कुछ जवाहरात के विषय में कहो।

दण्डी जी– पृथ्वी पर अन्न, जल और मधुर–वचन वास्तव में यही तीन रत्न हैं और मूर्ख पत्थरों के टुकड़ों को रत्न कहते हैं। फिर भी उन्हें **नीलम** आदि कई रत्नों की परीक्षा का उपदेश दिया। **मोतियों** के अनेक भेद बताए तथा **धातुओं** के संबंध में अनेक नई बातें बताईं।

नयन सुख दण्डी के पक्के भगत बन गए तथा दिन में कई–कई बार दर्शनों को आते रहते थे। भक्त बनने के बाद उस की आय में पर्याप्त वृद्धि हुई।

दण्डी जी शतरंज के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी थे– एक बार नयन सुख **लाला केदारनाथ खत्री** को लेकर–दण्डी जी के पास आए और **शतरंज खेलने का प्रस्ताव** रखा। दण्डी जी बड़े कुपित हुए और कहा, ''अपने साथी से कह दो–यहाँ शतरंज नहीं है। केदारनाथ ने नम्रता से कहा, ''शतरंज मैं लाता हूँ।'' अब दण्डी जी मौन हो गए। शतरंज लाई गई और खेल प्रारम्भ हुआ। दण्डी जी ने **आठ प्रकार** के शतरंजों की चर्चा की और शतरंज का विस्तृत वर्णन किया। दण्डी जी के आदेशानुसार जड़िया जी उन के मोहरे को चल देते थे और केदारनाथ जी की चाल उन्हें बता देते थे। खेल समाप्ति पर था तब दण्डी जी ने चली हुई सम्पूर्ण चालों का विवरण देकर कहा, ''अब तक तुम्हारी व मेरी 171 चालें हुई अब मैं 172वीं चाल चलता हूँ।'' अन्त में जड़िया जी की जीत हुई। केदारनाथ सहसा बोल उठा, ''**वाह! वाह!** क्या खूब करामाती मात।''

इसके बात दण्डी जी कभी शतरंज नहीं खेले परन्तु केदारनाथ दण्डी जी का सच्चा भक्त बन गया।

दण्डी जी का 'सरीनों का घर' आना तथा मकान मालिक व किराएदार का रोचक प्रसंग– केदारनाथ अत्यंत अनुनय–विनय कर के दण्डी जी को अपने घर में ले गए। यह **गतश्रम नारायण मन्दिर** से लगभग 15–16 दुकानों पहले, **छत्ता बाजार** में **सरीनों का घर** कहा जाता था। यह दो मंजिला मकान था। यहाँ दण्डी जी ने स्थाई रूप से पाठशाला खोल दी। इस मकान का किराया **दो रुपये** मासिक था।

अभी मकान में आए चौथा सप्ताह चल रहा था कि एक दिन केदारनाथ खत्री अचानक बिना सूचना दिए अन्दर आ गए। दण्डी जी ने पूछा–कौन है?

खत्री जी के मुँह से अनायास निकला– मालिक मकान स्वाभिमानी दण्डी जी बोले, ''खबरदार! मकान मालिक तो मैं हूँ। तू तो इस की कमाई खाता है– भटियारे की तरह है।'' केदारनाथ खत्री घबरा कर बोले, ''महाराज आप इस मकान के नहीं अपितु मेरे सारे घरों के स्वामी हैं। लगभग पचास हजार रुपयों की इस सम्पत्ति के मालिक है।'' इतना कहकर डरा हुआ, घबराया हुआ अपने घर चला गया।

तीन चार दिन गुजर गए। अभी महीना पूरा होने में एक दिन बाकी था तभी दण्डी जी ने एक शिष्य के हाथ दो रुपये किराए के खत्री को भिजवा दिए। शिष्य जबरदस्ती दो रुपए खत्री को दे आया। खत्री जी तुरन्त दण्डी जी के पास आए और निवेदन किया–

खत्री– महाराज! ये दो रुपए सेवक के पास क्यों भेजे?

दण्डी– मासिक किराए के लिए।

खत्री– क्या मालिक मकान भी किराए देते हैं?

दण्डी– अवश्य! किराया न दें तो मकान मालिक कैसे हुए?

खत्री– अब मेरे लिए क्या आज्ञा है?

दण्डी– किराया रख लो।

खत्री– इसे मैं अपना अपमान समझता हूँ।

दण्डी– और किराया न देना मैं अपमान मानता हूँ।

खत्री– इस नाराजगी का कारण?

दण्डी– मालिक मकान।

खत्री– महाराज! इस मकान को आप के नाम रजिस्ट्री करा दूँ ताकि इसे बेचने व गिरवी रखने का आप को पूरा अधिकार हो।

दण्डी– इसे मैं किराया न लेने से भी अधिक तौहीन समझता हूँ। बस सार यह है कि यदि मुझे इस मकान में रखना चाहते हो तो दो रुपए ले लो–नहीं तो कल मुझे इस मकान में न देख सकोगे। इच्छा न होते हुए भी–खत्री जी दो रुपए लेकर चल दिए।

यह गृह दण्डी जी को इतना अनुकूल रहा कि मृत्यु–पर्यन्त वे यहीं रहे। यह घर **22 वर्ष** पर्यन्त दण्डी जी के लिए तपोभूमि रहा और लगभग **ढ़ाई वर्ष** दयानन्द की भी साधना भूमि रहा है।

दण्डी जी के विषय में मिथ्या प्रचार– दण्डी जी **भागवत** पुराण तथा **मूर्तिपूजा** का हर समय तीव्र खण्डन करते थे। दण्डी जी की प्रसिद्धि एवं विद्वत्ता से मथुरा के पण्डित ईर्ष्या करने लगे तथा उनके विषय में अपवाद फैलाना प्रारंभ कर दिया। कोई कहता था–यह दण्डी **छीपा** है, कोई कहता था–यह तो **जुलाहा** है, यहाँ तक मिथ्या प्रचार किया– यह कोट पहनता है, यह पायजामा पहनता है, यह संयासी के गेरुए वस्त्र नहीं पहनता। **अष्टाध्यायी** के विषय में कहते थे– अरे यह तो **धर्मबाह्य पोथी** पढ़ाता है। दण्डी जी– बिना परवाह किए अपने कार्य में व्यस्त रहे।

परीक्षा लेने गए योग्य छात्र–स्वयं शिष्य बने– ईष्यालु पण्डित जब अनर्गल प्रलाप से अथवा अन्य प्रयत्नों से सफल न हो सके तब उन्होंने अपने योग्य छात्रों को **कठिन प्रश्न** सिखा–सिखा कर दण्डी जी की थाह लेने को भेजना प्रारंभ कर दिया। **युगल किशोर गौड़, जगन्नाथ चौबे, दामोदर धनाढ्य, चिरन्जी लाल** जी आदि दण्डी जी की थाह (गहराई–योग्यता) लेने को भेजे गए थे। पर वे सब के सब दण्डी जी की विद्वत्ता एवं व्याख्यान शैली से इतने प्रभावित हुए कि अपने पहले गुरुओं को छोड़कर दण्डी जी के शिष्य बन गए। अब यह पाठशाला चमक उठी।

पाठ्य विषय एवं पठनकाल– पाठशाला में मुख्यतया सिद्धान्त कौमुदी, शेखर चन्द्रिका, मनोरमा, न्याय, अमरकोश आदि पढ़ाए जाते थे। अभी अष्टाध्यायी का अध्यापन प्रारंभ नहीं हुआ था। दण्डी जी उच्चारण शुद्धता पर बहुत जोर देते थे। पढ़ाने का क्रम प्रातः स्नान ध्यान आदि से निवृत्त होकर सायं काल तक चलता रहता था। दण्डी जी न कभी आलस्य करते और न कभी थकते थे।

प्रतिपदा को भी अनध्याय नहीं होता था– संस्कृत पाठशालाओं में **प्रतिपदा** (पक्ष का पहला दिन) को अध्ययन नहीं होता था। परन्तु दण्डी जी अन्धविश्वास को न मानते हुए, प्रतिपदा को भी पढ़ाते थे। एक दिन वे **पुरुषोत्तम चौबे** का पढ़ा रहे थे। तभी एक विद्वान वहाँ आए और पूछा, ''आप प्रतिपदा के दिन भी पढ़ाते हैं–प्रतिपदा को तो पढ़ाई हुई विद्या नष्ट हो जाती है–देखो रामायण में **हनुमान** का यह वचन–'उस समय माता सीता ऐसी शिथिल दिखाई देती थी **जैसे कि प्रतिपदा के दिन पढ़ाई हुई विद्या।** दण्डी जी ने कहा, ''यह सर्वथा असंभव है–क्योंकि बाल्मीकि ऋषि ऐसी अर्नगल बात कभी नहीं लिख सकते।'' उसी समय पुरुषोत्तम चौबे से रामायण मँगवाई उसमें लिखा था। **''आम्नायानाम् अयोगेन विद्यां प्रशिथिलाम् इव (सुन्दर कांड 15–38) अर्थात्** सीता उस समय ऐसी शिथिल दिखाई देती थी–जैसी **अनभ्यस्त विद्या।''**

दण्डी जी यह जानकर अति प्रसन्न हुए कि **रामायण** में प्रतिपदा को पढ़ाने का निषेध नहीं है।

दण्डी जी मेरे अध्यापक रहेंगे–उदय प्रकाश– नए विद्यार्थियों को, दण्डी जी के पास जाने से रोकने के लिए हर प्रकार के प्रयत्न किए जाते थे। सेठ गोवर्धन दास के **गौघाट वाले मन्दिर** में **उदय प्रकाश** भागवत कथा किया करते थे। सेठ जी उन्हें पर्याप्त दक्षिणा तो देते ही थे, **मन्दिर** भी उन्हें भेंट करने को तैयार थे यदि वह (उदय प्रकाश) दण्डी जी से पढ़ना छोड़ दें। एक दिन सेठ जी ने उदय प्रकाश से कहा, ''आप पढ़ना ही चाहते हैं तो मैं **काशी** से बड़ा विद्वान बुलवा दूँ– परन्तु इस नास्तिक अन्धे दण्डी से मत पढ़ो।'' उदय प्रकाश बोले, ''आप दण्डी जी को नहीं समझ सकते। इस जन्म में दण्डी जी के सिवाय मेरा और कोई अध्यापक नहीं

शेष पृष्ठ 7 पर

www.thearyasamaj.org

महात्मा आनन्द स्वामी जी का एक संस्मरण

● महर्षि दयानन्द के आदर्श अनुयायी–महात्मा नारायण स्वामी

मुझे जेल के दो दिन सदा याद आते रहते हैं जब महात्मा नारायण स्वामी जी के साथ मुझे दिन–रात रहने का सुअवसर प्राप्त हुआ। हैदराबाद सत्याग्रह में नौ महीने की सजा हो चुकी थी। उन दिनों महात्मा नारायण स्वामी जी बृहद् आरण्यक उपनिषद् का हिन्दी अनुवाद कर रहे थे। गुलवर्गा जेल के बड़े वार्ड में धरती पर फटा कम्बल बिछाकर सोते थे। जेल में एक रात की बात सुनिए जब सारे सत्याग्राही सो रहे थे तो महात्मा नारायण स्वामी जी ने मुझे आवाज दी। मैं उनकी सेवा में उपस्थित हो गया तो कहने लगे कि शेख अब्दुल बहाब, सुपरिंटेन्डेंट जेल हम दोनों को जेल से निकाल कर किसी और स्थान पर रखना चाहता है। उसकी चाल यह है कि हमें यहाँ से हटाकर सत्याग्रहियों पर वो अत्याचार करे। इसलिए हमें सावधान रहना चाहिए। कल प्रातः उसने आकर यह बात शुरू करनी है। मैंने कहा महात्मा जी हमें किसी प्रकार से भी सत्याग्राहियों का साथ नहीं छोड़ना चाहिए। मैंने उत्तर में कहा कि मैं तो अपने सत्याग्रहियों के साथ ही रहूँगा। उन्हीं के साथ खाऊँगा और बैठूँगा। इसके पश्चात् महात्मा नारायण स्वामी जी कहने लगे कि यह तो साधारण बात थी। मैंने तुम्हें, रात के इस समय में इसलिए कष्ट दिया है कि इस सत्याग्रह से आर्य समाज को पर्याप्त शक्ति मिलेगी। परन्तु थोड़े समय के लिए होगी। आर्यसमाज पहले से अधिक शिथिल हो जाएगा। दो बातें आर्य समाज को उभरने नहीं देती। एक तो इसकी घरेलू फूट और दूसरे अध्यात्मवाद की कमी। तुम और महाशय कृष्ण यदि मिलकर काम करें तो आर्यसमाज को चार चाँद लग जाएँ। मैंने कहा कि मैं तो इसके लिए सर्वथा तैयार हूँ। महात्मा जी ने कहा कि मुझे आप पर ऐसा ही विश्वास है।

सत्याग्रह सफलतापूर्वक समाप्त हो गया। लाहौर पहुंचकर मैंने महाशय कृष्ण जी से मिलकर महात्मा नारायण स्वामी जी की शुभ इच्छा का वर्णन किया। उन्होंने भी इस प्रस्ताव को स्वीकार किया परन्तु इसके ऊपर कभी अमल न हो सका। हाँ पहले जैसी कटुता न रही। 1945 में मुझे महात्मा जी के आश्रम रामगढ़ में जाने का अवसर मिला। वहाँ महात्मा जी के आश्रम का उत्सव हो रहा था। पंडित गंगाप्रसाद जी, जज टीहरी तथा देवली के मुख्य आर्य कार्यकर्त्ता लाला नारायण दत्त जी भी विद्यमान थे। मैं अपने साथ भगवे रंग के वस्त्र ले गया था। महात्मा जी ने पूछा ये वस्त्र क्या हैं? मैंने कहा मैं आपसे संन्यास की दीक्षा लेने के लिए आया हूँ। महात्मा जी ने बड़े प्यार से मेरी ओर देखा और कहा, बड़ा शुभ विचार आपके मन में उत्पन्न हुआ है। मैंने कहा कि आर्यसमाज की शिथिलता को देखकर और उसमें अध्यात्मवाद की आवश्यकता अनुभव करके मैंने निश्चय किया है कि चतुर्थ आश्रम में प्रवेश कर जाऊँ। महात्मा नारायण स्वामी जी ने कहा कि आपका सन्यास साधारण नहीं है। स्वामी श्रद्धानन्द जी के पश्चात् आर्य जगत में ये एक महत्त्वपूर्ण कार्य होगा। यह साधारण बात नहीं, आपको संयास की दीक्षा हरिद्वार पहुँच कर दी जाएगी। नाम अभी से आनन्द स्वामी सरस्वती रखे देते हैं। परन्तु देश विभाजन की गड़बड़ के कारण से कार्य सम्पन्न न हो सका। महात्मा जी का शरीर रोगग्रस्त हो गया और ऑपरेशन के लिए महात्मा जी लाहौर पहुँचे। उन्हें सर गंगाराम हास्पिटल में भर्ती कराया गया। अस्पताल में महात्मा जी के पास बैठा हुआ था तो कहने लगे कि देश विभाजन के पश्चात् आर्यसमाज की शक्तियां बड़ी बिखर जाएंगी और उन्हें एकत्र करने में यदि भरसक प्रयत्न नहीं किया जाएगा तो आर्यसमाज की शिथिलता अधिक बढ़ जाएगी। मैंने कहा परमात्मा आपको जल्दी स्वस्थ करके ताकि विभाजन के पश्चात् आर्यसमाज को अधिक बलशाली बना सकें। उस दिन लाहौर में अग्निकांड और मारकाट शुरू हो गई। अस्पताल के डाक्टरों ने कहा कि इस भयंकर अवस्था में ऑपरेशन लाहौर में नहीं होना चाहिए। तब महात्मा जी को दिल्ली ले जाया गया और वहाँ से डा. श्याम स्वरूप जी के पास बरेली ले जाया गया। डा. श्यामस्वरूप जी ने महात्मा जी की सेवा तन, मन, धन से की। एक दिन महात्मा जी ने डा. श्याम स्वरूप जी से कहा कि अब आप मुझे किसी प्रकार की औषधि तथा अन्न, दूध न दें। मैं अब इस शरीर में रहना उचित नहीं समझता और अगले दिन उन्होंने प्राण त्याग दिए। महात्मा जी के साथ सात महीने इकट्ठा रहने से मुझे यह अनुभव हुआ कि महात्मा जी योग की उच्च सीढ़ी पर पहुँच चुके थे और उनके हृदय में उत्कट इच्छा थी कि वे आर्यसमाज के अन्दर आध्यात्मिक ज्योति जगाएँ। इसी उद्देश्य से उन्होंने आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर और रामगढ़ में 'साधना आश्रम' की स्थापना की। परन्तु जीवन यात्रा समाप्त हो गई और वे अपने स्वप्न आर्य–जगत् के सुपुर्द कर गए ताकि आर्य–जगत् इसे क्रियात्मक रूप दे सके।

आर्य मित्र (4.2.1968)
से साभार

☞ *पृष्ठ 6 का शेष*

गुरु विरजानन्द

हो सकता।''

'अजाद्युक्तिः'पदपरप्रसिद्धशास्त्रार्थ– एक बार यमुना के **विश्रान्त घाट** पर आरती के समय दण्डी विरजानन्द के शिष्य **गंगा दत्त चौबे** और **रंगदत्त चौबे–'अजाद्युक्तिः'** पद के समास पर विचार–विमर्श कर रहे थे। इन दोनों का निश्चय था इसमें **षष्ठी तत्पुरुष समास** है तथा **अजादेः उक्तिः** (अजादि की उक्ति) विग्रह है।

उस समय वहा उपस्थित **सेठ परिवार** के ज्योतिषी **लक्ष्मण शास्त्री** और द्वारिकाधीश मन्दिर के अध्यक्ष **मुरमुरिया पाण्ड्या** ने **सप्तमी तत्पुरुष समास** घोषित कर दिया तथा इस का विग्रह **आजादौ उक्तिः** (अजादि में उक्ति) बताया। दोनों पक्ष अपनी–अपनी बात पर अड़ गए।

पहले पक्ष वाले– गंगादत्त और रंगदत्त अपने गुरु दण्डी के पास गए और सारी बात बताई। दण्डी जी ने भी समर्थन कर दिया कि इसमें **षष्ठी तत्पुरुष** ही है। उधर **दूसरे पक्ष वालों ने** अपने नव गुरु **कृष्ण शास्त्री** से सलाह ली तो उन्होंने **सप्तमी तत्पुरुष** बताकर सेठ आश्रित पण्डितों का समर्थन किया। कृष्ण शास्त्री अपनी बात पर अड़ गए और दण्डी जी को **शास्त्रार्थ** हेतु ललकारा और दण्डी जी तुरंत तैयार हो गए। सभी पौराणिक पण्डित शास्त्रार्थ के पक्ष में थे अतः वे **कृष्ण शास्त्री** को **दण्डी** जी से भिड़ाना चाहते थे। यह शास्त्रार्थ दोनों ओर से प्रतिष्ठा का विषय हो गया। केवल **कृष्ण शास्त्री** ही नहीं, **सेठ राधाकृष्ण** तथा **रंगाचार्य** सहित कई मन्दिरों के स्वामियों की प्रतिष्ठा दाँव पर लग गई।

शास्त्रार्थ टालने हेतु दो–दो सौ रुपए जमा कराए– सेठ राधाकृष्ण दण्डी जी के गम्भीर ज्ञान, व्याकरण में निपुणता तथा अद्भुत स्मरण शक्ति से परिचित थे। उन्हें पता था कि दण्डी जी मथुरा के निवास काल में सदा अजेय रहे हैं। यद्यपि कृष्ण शास्त्री उस समय के मूर्धन्य शास्त्रार्थी विद्वानों में से एक थे परन्तु फिर भी वे उन्हें दण्डी जी के सम्मुख नहीं आने देना चाहते थे। वे मन ही मन जानते थे कि वे दण्डी के सामने टिक नहीं पाएँगे। अतः उन्होंने येन–केन प्रकारेण शास्त्रार्थ टालने की एक चाल चली। कृष्ण शास्त्री की ओर से **200 रुपए** दिए गए और दण्डी जी से कहा गया, ''तुम भी दो सौ रुपए जमा करो–जो शास्त्रार्थ में वियजी होगा वह 400 रु0 पाएगा। सेठ जी ने सोचा कि विरजानन्द दो सौ रुपए नहीं दे पाएंगे और इस प्रकार शास्त्रार्थ टल जाएगा पर स्वाभिमानी दण्डी जी ने तुरंत 200 रु0 भिजवा दिए। सेठ जी ने 100 रु0 अपनी ओर से मिलाकर 500 रु0 अपने पास रख लिए और घोषित किया कि ये 500 रु0 विजेता को दिए जाएँगे। शास्त्रार्थ **गत श्रम नारायण मन्दिर** में नियत तिथि पर संध्या समय पर तय किया गया। दण्डी जी ने नियत तिथि पर अपने शिष्यों को भेज दिया और कह दिया था कि कृष्ण शास्त्री के आते ही मुझे सूचित कर देना– मैं तुरंत आ जाऊँगा।

बिना शास्त्रार्थ के धोखे से पराजित– निश्चित तिथि पर नगर के लोग इकट्ठे होने लगे। दण्डी जी के शिष्य कृष्ण शास्त्री की प्रतीक्षा करते रहे। कृष्ण शास्त्री ने न आना था और न ही आए। कुछ देर बाद सेठ राधा कृष्ण आए और स्वयं **समापति** बन बैठे और बोले–, ''जब तक कृष्ण शास्त्री आते हैं तक तक **लक्ष्मण शास्त्री** और **मुरमुरिया पाण्ड्या** वार्तालाप आरंभ करें। दण्डी जी के शिष्य **गंगादत्त** और **रंगदत्त** न चाहते हुए भी– थोड़ी देर दोनों पक्षों में सामान्य प्रश्नोत्तर हुआ। यह शास्त्रार्थ थोड़े ही था यह तो **वितण्डा** था। बैठते ही लक्ष्मण शास्त्री दण्डी जी को गालियाँ देने लगा और बोला **जोगी मुंडा साधु क्या जाने?** इधर शिष्य भी दण्डी गुरु का अपमान सहन न कर सके और बोल पड़े– **दग्ध बैल शास्त्र क्या जाने।** यह कटाक्ष पूरे वैष्णव समाज पर था। बस फिर क्या था पण्डित मण्डली बोल पड़ी 'द्वारकाधीश की जय' उपयुक्त अवसर देखकर सेठ राधा कृष्ण ने ज़ोर से कहा– **विरजानन्द परास्त हो गए हैं** यह कह कर घण्टे बजवा दिए। दण्डी जी के शिष्य इस अन्याय के विरूद्ध **बाहुयुद्ध** के लिए तैयार हो गए– पर अपार भीड़ के सामने विवश होकर– गुरु दण्डी के पास आए और सारा वृत्तान्त निवेदन किया कि सेठ राधा कृष्ण ने यह सारा अनर्थ किया है। दण्डी जी इस प्रपंच से बहुत दुःखी हुए। दूसरे दिन मथुरा के कलेक्टर से मिले तथा उन से शास्त्रार्थ करवाने या दो सौ रुपए वापिस दिलवाने का अनुरोध किया। कलेक्टर महोदय ने इस प्रसंग में अपनी असमर्थता प्रकट की और कहा, ''स्वामी जी! राधाकृष्ण बहुत धनाढ्य है, अच्छा है– आप उन से न उलझें। आप जहाँ एक रुपया लगाओगे वहाँ वह 1000 रु. लगा देगा।

क्रमशः

1088/सैक्टर–4
गुड़गांव

www.thearyasamaj.org

पुस्तक समीक्षा

ऋषि अर्पण

● लेखक अभिमन्यु कुमार खुल्लर

श्री अभिमन्यु कुमार खुल्लर, लश्कर ग्वालियर द्वारा लिखित पुस्तक 'ऋषि अर्पण' पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ। इस पुस्तक में श्री खुल्लर द्वारा समय–समय पर लिखे गए 26 लेखों को स्थान प्राप्त हुआ है। लेखों को पाँच भागों में विभक्त किया गया है। पहला– महर्षि दयानन्द पर लिखे गए लेख, जिसमें सात लेखों को सम्मिलित किया गया है। दूसरा– ईश्वर विषयक लेख जिसमें 9 लेखों को स्थान मिला है। तीसरा– सामाजिक सरोकार के तीन लेखों ने स्थान प्राप्त किया है। चौथा– विविध 5 लेख जो अलग–अलग विषयों पर लिखे गए हैं। और पाँचवा– इसमें महाभारत से दो लेख लिए गए हैं। लेखों की भाषा सरल, सुबोध और प्रवाहमयी है। लेखों को मुहावरों, लोकोक्तियों और अलंकारों से बोझिल नहीं किया गया है। पुस्तक के मुख्य पृष्ठ पर महर्षि दयानन्द सरस्वती का चित्र दिया गया है। 'ऋषि अर्पण' वास्तव में ऋषि अर्पण ही क्योंकि इसके सभी लेखों में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष में ऋषि के ज्ञान का प्रसाद ही बाँटा गया है। अब हम संक्षेप में एक–एक भाग पर विचार करते हैं।

पहले भाग में जिन सात लेखों को स्थान मिला है वे सब वास्तव में दयानन्द के व्यक्तित्व और कृतित्व पर ही निर्धारित हैं। पहले लेख में स्वामी दयानन्द के कुछ गुणों यथा ब्रह्मचर्य की साधना, सत्य के प्रति निष्ठा, वित्तैषणा एवं लोकैषणा पर विजय, वीत–रागता, वेद एवं योग के प्रति निष्ठा आदि का विस्तार से वर्णन हुआ है। इसके अतिरिक्त लेख में बताया गया है कि वे देश को पराधीनता की बेड़ियो से मुक्त करवाने के लिए जन मानस को तैयार करने का प्रयत्न करते हुए दिखाई देते हैं। स्त्री और पुरूष के समान अधिकार, उनकी अनिवार्य शिक्षा के लिए राजकीय प्रबन्ध और औद्योगिक क्रान्ति के लिए टेक्निकल शिक्षा के लिए जर्मनी के विद्वानों से सम्पर्क करते हैं। जात–पात छुआछूत को स्वीकार नहीं करते हैं। गुण, कर्म और स्वभाव के आधार पर वर्णाश्रम धर्म का प्रचार करते हैं। इसीलिए देश के महान् व्यक्तियों को उन्होंने अपनी ओर आकर्षित किया है। इसी तरह पाश्चात्य विद्वान भी उनसे प्रभावित हुए हैं। प्रो. मैक्समूलर, प्रो. मोनियर विलियम्स, रोम्या रोला, एण्ड्यूज, कर्नल अल्काट, पाल रिचर्ड, डा. विन्टरनीज आदि ने उनके कार्यो की भूरि–भूरि प्रशंसा की है। दूसरे लेख में स्वामी दयानन्द को वेद के उद्धारक के रूप में निरूपित किया गया है। लेखक का मानना यह है कि स्वामी दयानन्द को वेद के उद्धारक के रूप में निरूपित किया गया है। लेखक का मानना यह है कि स्वामी दयानन्द मूर्तिपूजा का विरोध नहीं करते बल्कि यह स्थापित करते हैं कि मूर्ति पूजा वेद सम्मत नहीं है। बौद्धों व जैनियों से पूर्व भगवान राम तथा श्रीकृष्ण जिस निराकार, सर्वशक्तिमान, सर्वेश्वर की उपासना करते थे उसी की हमें उपासना करनी चाहिए। अगले लेख 'जन्मना संन्यासी ' में लेखक वर्णन करता है कि स्वामी दयानन्द में शैशव अवस्था से ही संन्यासी के लक्षण पाए जाते हैं। उन्होंने अपनी बहिन तथा काका की मृत्यु को देखकर ही वैराग्य धारण कर लिया था। शिवरात्रि की घटना ने उन्हें सच्चे शिव की खोज में घर से निकल पड़ने को विवश कर दिया। काशी शास्त्रार्थ में प्रपञ्च रचकर उन्हें पराजित घोषित कर दिया परन्तु इससे वे तनिक भी विचलित नहीं हुए। निर्मल साधु पं. ईश्वरसिंह उसी दिन सन्ध्याकाल में स्वामीजी से मिले तो उन्हें वे निर्विकार और निर्लेप संन्यासी प्रतीत हुए। इसी प्रकार पूना में न्यायमूर्ति महादेव रानाडे ने भी अनुभव किया, जब पूना में स्वामी दयानन्द को अपमानित करने का पुराणपन्थियों ने ढोंग किया। स्वामी दयानन्द का लक्ष्य संसार से अविद्या अंधकार को दूर कर वेद विद्या का प्रकाश फैलाना था, यह 'विश्वात्मा देव दयानन्द' 'लेख में बताया गया है।' 'महर्षि दयानन्द की समस्याएँ' शीर्षक लेख में बताया गया है कि स्वामी जी के सामने अनेक समस्याएँ थी। पहली समस्या थी बहु देववाद के विरूद्ध मोर्चा जमाकर उसे हटाकर एकेश्वरवाद को प्रतिष्ठापित करना। मूर्ति पूजा को हटाकर निराकार ब्रह्म की उपासना को लोकप्रिय बनाना। दूसरी समस्या थी जात–पात की, समाज में प्रचलित छुआ–छूत की, जिसे दूर किए बिना देश में एकता स्थापित करना असम्भव था। तीसरी समस्या अज्ञानान्धकार को मिटाकर ज्ञान का प्रकाश फैलाना। उस समय शिक्षा नहीं के बराबर 2% से भी कम थी। स्त्रियों को शिक्षा दी ही नहीं जा रही थी। शिक्षा के अभाव में वेद का पढ़ना पढ़ाना कैसे संभव होता। फिर वेद की शिक्षा सभी के लिए सुलभ करना तो अत्यन्त ही कठिन कर्म था। शूद्र और स्त्रियों को वेद के पढ़ने और सुनने का अधिकार नहीं था। फिर निर्धनता सबसे बड़ी समस्या थी। स्वामी जी ने इन सभी समस्याओं पर सरकार एवं प्रबुद्ध लोगों का ध्यान खींचा। स्वामी दयानन्द सरस्वती ही पहले विचारक थे जिन्होंने इनके निराकरण पर कार्य प्रारम्भ किया और आज स्थिति में पर्याप्त परिवर्तन भी हुआ है।

दूसरे भाग में 9 लेख हैं, जिनमें ईश्वर के स्वरूप व कार्य पर विचार किया गया है। 'ईश्वरोपासना क्यों?' और कैसे! इस श्रृंखला का पहला लेख है। इस लेख में विभिन्न धर्मो द्वारा अपनायी गई पूजा पद्धति की निस्सारता बताने के साथ ही योग द्वारा उपासना पर बल दिया गया है। जप के लिए गायत्री मंत्र को चुना गया है। 'ईश्वर की अवधारणा और ईश्वर पर विश्वास' लेख में मातृभाषा में अथवा वैदिक मंत्रों को समझते हुए प्रार्थना और उपासना करने को कहा गया है। बहुदेववाद का विरोध कर एकेश्वरवाद का समर्थन किया है तथा कहा गया है कि ब्रह्मा, विष्णु, महादेव, गणेश शक्ति आदि एक ही ईश्वर के गुणवाचक नाम है।

ईश्वर सिद्धि सम्बन्धी मन्तव्य और मैं' लेख में, लेखक ने सत्यार्थ प्रकाश सप्तम समुल्लास में स्वामी दयानन्द के मन्तव्य को आधार बनाया है। स्वामीजी प्रत्यक्षादि प्रमाणों से ईश्वरसिद्धि करते हुए लिखते हैं कि महर्षि गौतम कृत न्यायदर्शन के सूत्र के अनुसार जो श्रोत्र, त्वचा, चक्षु, जिह्वा, घ्राण, प्राण और मन का शब्द, स्पर्श रूप, रस, गन्ध, सुख, दुःख, सत्यासत्य विषयों के साथ सम्बन्ध होने से जो ज्ञान उत्पन्न होता है उसको प्रत्यक्ष कहते हैं परन्तु वह निर्भ्रम होता है।

अब विचारना चाहिए कि इन्द्रियों और मन से गुणों का प्रत्यक्ष होता है गुणी का नहीं। जैसे चारों त्वचा आदि इन्द्रियों से स्पर्श, रूप, रस और गन्ध का ज्ञान होने से गुणी जो पृथ्वी है, उसका आत्मा युक्त मन से प्रत्यक्ष किया जाता है। वैसे इस प्रत्यक्ष सृष्टि में रचना विशेषादि ज्ञानादि गुणों के प्रत्यक्ष होने से परमेश्वर का भी प्रत्यक्ष है। जब आत्मा और मन, इन्द्रियों को किसी विषय में लगाता व चोरी आदि बुरी या परोपकार आदि अच्छी बात के करने का जिस क्षण में आरम्भ करता है उस समय जीव की इच्छा, ज्ञानादि उसी इच्छित विषय पर झुक जाता है। उसी क्षण में आत्मा के भीतर से बुरे काम करने में भय, शंका और लज्जा तथा अच्छे कामों को करने में अभय, निःशंकता और आनन्दोत्सव उठता है। वह जीवात्मा की ओर से नहीं वरन् परमात्मा की ओर से है। 'प्रार्थना और उपासना' लेख में लेखक ने बताया है कि राम और कृष्ण सन्ध्यावन्दन किसका करते थे और किन शब्दों में करते थे? क्या उस विष्णु की जिसके वे अवतार घोषित किए गए हैं। या उस विष्णु की जो सर्वव्यापक है और सर्व व्यापक होने से निराकार ठहरता है।

स्वामी दयानन्द ने बताया कि दोनों आप्त पुरूष थे। वे प्रार्थना करते थे 'य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः यस्य छायामृतं।' अथवा 'अग्ने नय सुपथा राये अस्मान ....विधेम' आदि आदि वेद मंत्रों से। मूर्ति पूजन से आपकी मनोकामना संभव हो जाए यह असंभव है। इस विषय में लेखक ने एक दृष्टांत दिया है जो इस प्रकार है–

तिरूपति बालाजी मन्दिर के एक पुजारी मूर्ति पर चढ़ाए गए आभूषणों की चोरी में पकड़े गए। पुलिस को पूछताछ में उन्होंने चोरी करना स्वीकार किया और कारण पुत्री के विवाह के लिए धनाभाव बताया। अब सोचिए अरबों–खरबों के मालिक बालाजी उस पुजारी की मनोकामना जान ही नहीं सके, जिसने अपना सम्पूर्ण जीवन उनके श्रृंगार, पूजन, अर्चन, नैवेद्य चढ़ाने आदि में लगा दिया। फिर एक क्षण मूर्ति के दर्शन करने वाले की मनोकामना कैसे पूरी होगी?

इसी प्रकार ईसाईयों में ईश्वर को एकदेशी मानने से भी पापाचार पर रोक नहीं लगती है। इस पर एक उदाहरण दिया गया है– वैटिकन सिटी में एक गूंगे बहरे बच्चों का आश्रम है। टाइम्स ऑफ इण्डिया 15 सितम्बर 2009 में प्रकाशित हुआ है कि इस आश्रम में बहरे बच्चे पादरियों के व्यभिचार का शिकार है। 73 प्रकरणों को लेखबद्ध किया गया है और 235 बच्चे इस दुराचार के शिकार हुए हैं। पादरियों को न तो उनके धर्म गुरू पोप रोक पाए और न ही उनके ईश्वर या ईश्वर पुत्र ईसामसीह।

वेद के आधार पर स्वामी दयानन्द ने ईश्वर का स्वरूप इस प्रकार माना है– 'ईश्वर, सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वव्यापक, सर्वन्तयामी, अजर–अमर, अभय नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करने योग्य है।'

शेष पृष्ठ 11 पर

☞ पृष्ठ 3 का शेष

महर्षि दयानन्द विनोद....

समझा। कई भद्र पुरूषों ने उसे समझाया कि सभ्य पुरूषों की तरह बैठकर वर्तालाप करो, परन्तु वह ऐसा हठीला था कि वहीं डटा रहा। स्वामी जी ने लोगों से कहा कि कोई हानि नहीं, पण्डित जी वहीं बैठे रहें। केवल ऊँचे आसन से किसी को महत्त्व प्राप्त नहीं होता। यदि ऊँचा आसन बड़ाई के कारण से हो तो पण्डित जी से भी ऊँचे वृक्ष पर कौआ बैठा है।

5. सन् 1879 में स्वामी जी कानपुर होते हुए दानपुर पहुँचे। वहाँ स्वामी जी से एक पुरूष ने प्रार्थना की, "महाराज! अभ्यास में मन लगाने का बहुत ही यत्न करता हूँ, परन्तु मन नहीं लगता। इसके संकल्प–विकल्प शान्त ही नहीं होते।

स्वामी जी ने व्यंग तथा विनोद भाव से कहा कि यदि मन नहीं टिकता तो भाँग भवानी का एक लोटा और चढ़ा लिया करो।

यह उत्तर सुनकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। वह मन ही मन कहने लगा, कि स्वामी जी को तो पता भी नहीं है कि मैं भांग पीता हूँ। फिर यह कैसे जान गए? सच है सत्पुरूषों के सामर्थ्य की कोई सीमा नहीं होती। उनका महात्म्य अगम्य हुआ करता है। इसी प्रकार एक दिन एक अन्य महाशय ने भी निवेदन किया। भगवन! उपासना में चंचल चित्त को टिकाने के लिए किसी योग–क्रिया का उपदेश दीजिए।

स्वामी जी ने पहले वाले भाव से ही शिक्षा दी कि एक विवाह और कर लो, फिर चित्त आप ही स्थिर हो जाएगा। यह उत्तर सुनकर, वह व्यक्ति अति लज्जित और विस्मित हुआ। लज्जा तो उसे इसलिए आई कि एक स्त्री के जीते जी उसने दूसरा विवाह कर लिया था, और आश्चर्य इसलिए हुआ कि बिना बताए, महाराज को इसका ज्ञान हुआ तो कैसे हुआ।

6. यह घटना सन् पहुँचे 1872 की है। स्वामी जी सायंकाल 8 बजे पटना से चलकर, गाड़ी से रात के बारह बजे जमालपुर जंकशन पर पहुंची। उस समय मुंगेर को जाने वाली गाड़ी के छूटने में एक घण्टा शेष था। स्वामी जी पटना की गाड़ी से उतर कर वहीं जमालपुर स्टेशन के आँगन में टहलने लग गए। उस समय वहाँ एक अंग्रेज इंजीनियर पत्नी सहित खड़ा था। उस इंजीनियर की पत्नी ने कौपीनमात्र धारी एक परमहंस को अपने सामने घूमता देखकर बुरा माना। इंजीनियर महाशय ने तुरन्त जाकर स्टेशन मास्टर से कहा, "यह कौन नंगा टहल रहा है? इसे इधर–उधर घूमने से बन्द कर दो।" स्टेशन मास्टर ने महाराज को अति विनीत भाव से कहा, "भगवन! दूसरी ओर चलकर कुर्सी पर आराम कीजिए। मुंगेर की गाड़ी के जाने में अभी बड़ी देर है।

स्वामी जी पहले ही सब कुछ समझ गए थे। इसलिए उन्होंने स्टेशन मास्टर से कहा, जिस महाशय ने मुझे हटा देने के लिए आपको यहाँ भेजा है, उसे जाकर कह दीजिए कि हम उस युग के मनुष्य हैं, जिस युग में बाबा आदम और माता हव्वा, अदन उद्यान में, नग्न घूमने में किंचित भी लज्जा न करते थे। महाराज ने टहलना पहले की भाँति ही जारी रखा। इंजीनियर ने स्टेशन मास्टर को पुनः बुलाकर अपना आदेश दुहराया। इस पर स्टेशन मास्टर ने कहा कि महाशय! यह कोई साधारण व्यक्ति नहीं है, जिसे मैं आँगन से निकाल दूँ। यह तो हम और आप जैसों को कुछ भी न समझने वाला एक स्वतंत्र संयासी है। तब इंजीनियर ने स्वामी जी का श्री नाम पूछा। इस पर स्टेशन मास्टर ने कहा कि इनका नाम दयानन्द सरस्वती है। इंजीनियर महाशय यह कहता हुआ कि क्या ये प्रसिद्ध सुधारक दयानन्द सरस्वती हैं, तत्काल उठ खड़ा हुआ और स्वामी जी के समीप जाकर उसने विनीत भाव से नमस्कार किया, और कहा, "चिरकाल से मेरे चित्त में आपके दर्शनों की अभिलाषा थी। यह मेरा सौभाग्य है कि यहाँ आपके दर्शन हो गए हैं।

इस लेख में स्वामी जी ने वैदिक संस्कृति को ध्यान में रखते हुए आदम और हव्वा को बाबा आदम और माता हव्वा कह कर सम्बोधित किया है। बाकी हर स्थान पर आपको आदम और हव्वा ही पढ़ने का मिलेगा। यह हमारी ही एक वैदिक संस्कृति है जो दूसरे मतों के महान् व्यक्तियों को भी सम्मानित शब्दों में सम्बोधित करना सिखाती है।

180 महात्मा गांधी रोड, कोलकता–7

☞ पृष्ठ 5 का शेष

गुजराती लेखकों की...

ऋषि महिमा का गान किया। यह नागरी तथा गुजराती दोनों लिपियों में प्रकाशित हुई गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा के एक ट्रस्टी नटवरलाल दुवे ने ऋषि दयानन्द की आत्मकथा वाले पुणे प्रवचन का गुजराती अनुवाद महर्षि दयानन्द स्वयं कथित जीवन चरित शीर्षक से किया जो 1982 में प्रकाशित हुआ।

गुजरात के गुरूकुल काँगड़ी में शिक्षित नित्यानंद पटेल वेदालंकार का महत्त्वपूर्ण स्थान है। 1913 में जन्मे पं. नित्यानंद प्रसिद्ध आर्य प्रकाशक श्री गोविन्दराम (गोविन्दराम हासानन्द) के दामाद थे। अध्यापन के कार्य में लगे हुए पं. वेदालंकार आर्य महिला कालेज पोरबंदर के प्राचार्य भी रहे। 1998 में उनका निधन हुआ। उनकी संध्या व्याख्या पर लिखी दो पुस्तकें संध्या सुमन तथा संध्या विनय चर्चित रहीं। ये ग्रन्थ हिन्दी में हैं।

ऋषि दयानन्द के आत्मकथा परक पुणे में दिए गए व्याख्यान को सर्वप्रथम गुजराती में अनुदित करने वाले बलवन्तराव कल्याणराव ठाकोर राजकोट के उस राजकुमार कालेज में प्रोफेसर रहे थे। जहाँ किसी समय ऋषि दयानन्द ने छात्र एवं अध्यापक समुदाय के समक्ष भाषण दिया था। स्वामी दयानन्द स्वरचित (कथित) जीवन वृत्तान्त शीर्षक यह 1914 में बड़ौदा से प्रकाशित हुआ। इसकी भूमिका देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय ने लिखी थी जो ऋषि जीवन के गवेषक थे। पं. मदनशंकर जयशंकर त्रिवेदी पुरानी पीढ़ी के विद्वान थे। ये आर्यसमाज मुम्बई के प्रारम्भ कालीन सभासद थे। वे ऋषि के समकालीन थे तथा उन्होंने महाराज के दर्शन भी किए थे। सत्यार्थप्रकाश तथा ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका गुजराती में प्रथम अनुवाद करने का श्रेय उन्हें ही है। ये दोनों अनुवाद 1904 में छपे थे।

गुरूकुल काँगड़ी के गुजराती स्नातकों में महेन्द्रनाथ वेदालंकार का नाम भी उल्लेख योग्य है। इन्होंने कुछ हिन्दी ग्रन्थों का गुजराती में अनुवाद किया था। रतनसिंह दीपसिंह परमार ने स्वामी सरस्वती गुं जीवनचरित शीर्षक से एक संक्षिप्त जीवनी लिखी जो 1916 में प्रकाशित हुई।

ऋषि दयानन्द के जीवन चरित के विभिन्न पहलुओं पर विचार करने वालों में प्राध्यापक विपिनचन्द्र त्रिवेदी (जन्म 1946) पेशे से अर्थशास्त्र के अध्यापक हैं। आपके दयानन्द जीवन विषयक निम्न शोध प्रबन्ध वेदवाणी के दयानन्द विशेषांकों में छपे हैं– 1. महर्षि दयानन्द का बम्बई शास्त्रार्थ और पं. जयकृष्ण व्यास 2. म. दयानन्द और पं. गट्टूलाल 3. महर्षि के गुजराती भक्त – मथुरादास लवजी 4. लाला भक्त, सामला और ब्र. शुद्ध चैतन्य। ऋषि की जीवनी में रूचि रखने वालों के लिए इन शोध निबंधों की उपयोगिता निर्विवाद है। यहाँ यह ध्यातव्य है कि पं. आत्माराम अमृतसरी मूलतः पंजाब के निवासी थे, किन्तु बड़ौदा नरेश महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ ने उन्हें अपने राज्य की हरिजन पाठशालाओं के निरीक्षक पद पर नियुक्ति ही थे। तभी से उनका परिवार गुजरात का निवासी हो गया। उनके पुत्रों पं. शान्तिप्रिय तथा पं. आनन्द प्रिय तथा पुत्री सुशीला ने गुजराती साहित्य को प्रबुद्ध किया। विशेषतः उनकी पुत्री कु. सुशीला आत्माराम ने अपने माता–पिता की जीवनी आदर्श दम्पती शीर्षक से लिखी। उनकी पौत्री डा. सरस्वती पण्डित (पुत्री पं. शान्तिप्रिय) ने आर्यसमाज की भारतीय शिक्षा को देन विषय पर अंग्रेजी में शोध प्रबंध The Contribution of AryaSamaj to Indian Education शीर्षक से लिखा जो सार्वदेशिक सभा द्वारा छपा है। पं. आनंदप्रिय भी प्रायः लिखते थे। यहाँ हमने कतिपय गुजराती लेखकों का सामान्य परिचय ही दिया है। इनका यथोपलब्ध परिचय हमने स्वरचित ग्रन्थ आर्यलेखककोश में विस्तार से दिया है। अब हम उन लेखकों की कृतियों का परिचय देंगे जो उन गुजराती लेखकों द्वारा लिखी गई हैं जो यों तो आर्यसमाज से औपचारिक रूप में सम्बद्ध नहीं रहे तथापि उनकी श्रद्धा आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द के प्रति निर्विवाद थी।

गुरूकुल काँगड़ी के स्नातकों ने भारतीय साहित्य को समुन्नत करने में विशेष योगदान किया है। उनमें पं. शंकरदेव विद्यालंकार का नाम इस दृष्टि से उल्लेखनीय है कि उन्होंने विभिन्न भारतीय भाषाओं में लिखी गई उल्लेखनीय रचनाओं को हिन्दी पत्रों के माध्यम से हिन्दी भाषी पाठकों तक पहुँचाया। पं. शंकर दुवे (1907–1981) बलसाढ़ जिले के एक ग्राम के निवासी थे। उन्होंने 1928 में विद्यालंकार की उपाधि प्राप्त की तथा पर्याप्त समय तक अध्यापन किया। वे सेठ नानजी कालिदास मेहता द्वारा स्थापित पोरबंदर के महिला आर्ट्स कालेज के उपाचार्य भी रहे। इन पंक्तियों के लेखक को उन्होंने ऋषि दयानन्द का एक सर्वांग सुन्दर, साहित्यक गुण युक्त विवेचन प्रधान जीवन चरित लिखने की बार–बार प्रेरणा दी। फलतः 1983 में नवजागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती शीर्षक स्वामीजी का बृहद् जीवन चरित प्रकाश में आया।

यों तो गुजरात के आर्य साहित्य के प्रकाशकों की पृथक चर्चा होनी चाहिए तथापि यहाँ गुजराती में आर्य साहित्य के लेखक प्रकाशक श्रीकान्त भगतजी की चर्चा करना उपयुक्त है। श्रीकान्त भगत जी (1918–1981) मूलतः बड़ौदा के निवासी थे। उन्होंने सूरत में आर्य सेवा संघ की स्थापना की तथा अनेक लघु पुस्तिकाएँ प्रकाशित कीं।

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

www.thearyasamaj.org

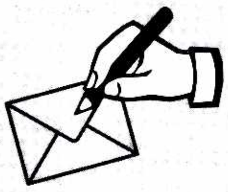

पत्र/कविता

ध्यान क्यों नही लगता?

कुछ सज्जनों का कहना है कि सन्ध्या (ईश्वर भक्ति) करते समय ध्यान नहीं लगता। ध्यान क्यों नहीं लगता इसका कारण है कि
धारणा दृढ़ नहीं है। ध्यान लगाने से पहले धारणा बनानी पड़ती है। यदि धारणा पक्की नहीं है तब ध्यान कभी नहीं लगेगा। ध्यान लगाने के लिए धारणा को अटूट बना

धारणा बनती है मन के द्वारा और मन है चंचल। फिर पहले मन को वश में करो। मन बुद्धि के अधीन है। यदि बुद्धि में ही मलिनता भरी हुई है तब मन मनमानी करने में स्वतंत्र हो जाता है। इन्द्रियों के बहकावे में आकर संयम खो देता है। धारणा धरी रह जाती है। फिर ध्यान लगाने का प्रश्न ही नहीं होता

प्रिय बंधुओ! पहले बुद्धि को निर्मल करो! बुद्धि की निर्मलता के लिए शुद्ध सात्विक आहार ग्रहण करो! तामसिक भोजन से बचो जो बुद्धि भ्रष्ट करता है। विद्वानों का सत्संग करो! आर्य पुस्तकों का स्वाध्याय करो। मन को वश में करने के लिए प्राणायाम द्वारा अभ्यास करो। मन में धारणा बनाओ कि ईश्वर उपासना करनी आवश्यक है। धारणा जमते ही ध्यान लगाना संभव है जाएगा। जैसे प्यासे व्यक्ति की धारणा वानी प्राप्त करने की ओर ध्यान लगा देती है ऐसे ही ईश्वर भक्ति बनाने से ध्यान लग जाता है।

देवराज आर्य मित्र नई दिल्ली–64

****

योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः

चितवृत्तियों का निरोध करना ही योग कहाता।
जो कि व्यक्ति को आत्म उन्नति के पथ पे ले जाता।।

चितवृत्तियाँ जो प्रायः मन पर हैं छाई रहतीं।
वे ही पशु प्रवृत्तियों में उसको उलझाऐ रहतीं।।

जिससे उच्च ध्येय तज के चित्त रहता सदा भटकता।
आत्मोन्नति के लिये प्रगति के पथ पे नहीं बढ़ सकता।।

ये निद्रा, प्रमाण, विपर्यय अरू विकल्प, स्मृति हैं।
जो कि आत्म–परमात्म मिलन में बाधऐं सृजती है।।

भोगे गये इन्द्रिय भोगों के संस्कार की छाया–
के गत दृश्यों को उभार, उद्वेलित कर मन भाया।।

इन्द्रिय विषयों के प्रसंगों में ''प्रमाण'' उलझाती।
और ''विपर्यय वृत्ति'' सदा प्रतिकूल हि ज्ञान कराती।।

जिससे सत्य वस्तु स्थिति का ज्ञान नहीं हो पाता।
अरू कस्तूरी मृग के जैसा चित रहता भटकाता।।

''विकल्पवृत्ति'' संदेह, अशंका, कायरता, भय लाती।
''निन्द्रा'' आलस, तम, उपेक्षा अरु अवसाद बढ़ाती।।

''स्मृतिवृत्ति'' नीच योनि के अभ्यासों की स्मृति।
को उभार मानव मर्यादाओं की करके दुर्गति।।

ऐसे कार्य करा लेती जिससे साधक गिर जाता।
अस्तु अवश्यक साधक को इनका निरोध हो जाता।।

ये निरोध–संघर्ष अष्टधा सोपानों में क्रमशः।
दुष्प्रवृत्तियों को ध्वस्त कर तत्वज्ञान की द्युतितः।।

में स्वात्म को परमेश्वर से है ऐसा मिलवाता।
कि स्वात्म परमानन्द पाके शान्त तृप्त हो जाता।।

चेतन शक्ति स्व स्वरूप में है प्रतिष्ठ हो जाती।
जिससे आनन्द, शक्ति, सिद्धि सब कुछ सुलभ्य हो जाती।।

दयाशंकर गोयल 1554, डी सुदामा नगर
इंदौर (म.प्र.)–452009

मांस निर्यात क्यों

राज्य सभा सदस्य श्री भगत सिंह जी से नम्र आग्रह है कि वह मांस निर्यात की समीक्षा में इस विषय को हमेशा के लिए नकार दे क्योंकि

1. हमारे देश में दुधारु पशुओं की संख्या दिन–प्रतिदिन घट रही है विशेषकर गौवंश।
2. यदि मांस निर्यात को प्रोत्साहन दिया जायेगा तो दुधारू पशुओं की संख्या और तेजी से घटेगी क्योंकि विदेशों में गौवंश के मांस की मांग बहुत ज्यादा है जिसको नियंत्रित करना असंभव है।
3. विदेशों को मांस निर्यात करने पर हमारे देश में असीमित बूचड़ खाने स्थापित हो जायेंगे जो पर्यावरण के लिए हानिकारक है।
4. भारतीय संस्कृति में इस प्रकार के व्यापार से देश की प्रतिष्ठा को आंच आयेगी

श्री कृष्ण मोहन गोयल
113 बाजार कोट अमरोहा 244221

****

लेख जीवन सुधार के लिए रसायन का काम करते हैं

मैं आपके पत्र आर्य जगत का बहुत पुराना स्थाई ग्राहक हूँ। समय–समय पर मैं पहले भी लिखता रहा हूँ कि आपका पत्र बहुत अति उत्तम बढ़िया कागज जिसमें काफी पेज होते हैं बड़े–2 विद्वानों के लेख सामाजिक व आध्यात्मिक छपते रहते हैं जो प्रत्येक व्यक्ति के जीवन सुधार के लिये एक रसायन का काम देते है। इतनी बढ़िया सामग्री शायद ही किसी दूसरे पत्र पत्रिका म हो। मैंने कई वर्ष तक ''आर्य संसार'' विधान सारणी कलकत्ता का पढ़ा। उसमें भी इतना मज़ा नही आया। इस आपके प्रिय पत्र की दूसरे लोग भी बड़ी सराहना करते हैं। कई आदमियों के मैंने अपने पास से चंदा भरकर उनके नाम ''आर्य जगत'' कराया और कईयों को स्थाई सदस्य भी बनाया। पुराने सम्पादक स्व: श्री क्षितीश वेदालंकार के समय अपने लेख भेजे जो छपे अब लिखना कठिन है। अब इस समय मैं बिल्कुल असमर्थ हो गया हूँ। मेरी आयु 86 वर्ष हो चुकी है। मेरी दोनों कुल्लियां टूटी हुई है, एक हाथ भी टूटा हुआ है आंखों से दिखना कम हो गया है शरीर में अनेक व्याधियां हो गई हैं। खाना–पीना भी प्रायः नष्ट हो गया है। यह आपका महात्मा आनंद स्वामी की बावत लेख ''प्रभु दर्शन'' पढ़ा उसके लिये आपका अति धन्यवाद।

भरत सिंह शेकर आर्य
''आर्य निवास''
176–A शान्तिनगर पानीपत 1632103

****

☞ पृष्ठ 9 का शेष

गुजराती लेखकों की...

'बृहद गुजरात मां आर्यसमाज' एक महत्त्वपूर्ण मानक ग्रन्थ है जिसमें गुजरात में हुए आर्यसमाज विषयक कार्य का विस्तृत विवरण एकत्र किया गया है। यह संदर्भ ग्रन्थ है जो अपने विषय की प्रामाणिक जानकारी देता है।

यहाँ आर्य समाज से असम्बद्ध गुजराती लेखकों के कार्य विवरण देना भी आवश्यक है जो यद्यपि औपचारिक रूप से आर्यसमाज से नहीं जुड़े तथापि उन्होंने अपनी मातृभाषा में आर्यसमाज तथा ऋषि दयानन्द से सम्बन्धित विषयों पर प्रामाणिक ग्रन्थ लिखे। सर्वप्रथम प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ तथा सार्वजनिक नेता इन्दुलाल याज्ञनिक (याज्ञिक) का उल्लेख करेंगे जिन्होंने स्वामी दयानन्द के तेजस्वी शिष्य श्यामजी कृष्ण वर्मा का प्रमाणिक जीवन चरित अंग्रेजी में लिखा। पेशे से वकील याज्ञिक समाजवादी आन्दोलन से जुड़े थे और उन्होंने श्यामजी के जीवन का सर्वांगीण विवेचन इस ग्रन्थ में किया। हिन्दी में जो दो तीन जीवन चरित लिखे गए उनका आधार यही अंग्रेजी जीवन चरित है। जो श्याम जी के जीवन के सभी पहलुओं पर प्रामाणिक सामग्री देता है।

जामनगर के निवासी डा. कमल पुंजाजी ने हिन्दी का पत्र साहित्य लिखकर पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। यथाप्रसंग स्वामी दयानन्द के पत्र साहित्य की विशद विवेचना की गई है। गुजराती के उपन्यास लेखकों में मेहसाना जिले के मूल निवासी डा. केशु भाई देसाई का नाम अग्रगण्य है। उन्होंने गुजराती कथा साहित्य को अपनी विशिष्ट कृतियों द्वारा समृद्ध किया है। डा. देसाई पेशे से चिकित्सक है किन्तु कथा लेखन उनकी विशिष्ट प्रवृत्ति है। ऋषि दयानन्द को विष देने वाले को कथा के केन्द्र बिन्दु में रखकर उन्होंने सूरज बुझाव्यानु पाप नामक उपन्यास लिखा। शैली और अभिव्यक्ति की दृष्टि से इस उपन्यास की रोचकता निर्विवाद है। इन पंक्तियों के लेखक ने इसका हिन्दी अनुवाद किया है।

गुजराती लेखक और गम्भीर चिन्तक धनवन्त ओझा ने स्वामी दयानन्द की एक विचारोत्तेजक संक्षिप्त जीवनी लिखी जो 1962 में अहमदाबाद में छपी थी। दयानन्द विषयक चिन्तन को नया आयाम देने वाले तथा कार्लमार्क्स के विचारों से उनका तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने वाले नरेन्द्र देव का उल्लेख इस प्रसंग में आवश्यक है। 1929 में राजकोट में जन्मे नरेन्द्र दयानन्द तथा लेनिन के विचारों से समान रूप से प्रभावित थे। वे प्रखर चिन्तक, मौलिक विचारक तथा गम्भीर विवेचक थे। मार्क्स अने दयानन्द, क्रान्ति गुरु दयानन्द, दयानन्द ए रिएसेसमेंट उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं जिनमें ऋषि के विचारों को एक दृष्टि से विवेचित किया गया है। गुजराती के मूल निवासी वसन्तराय जे. जोशी को इस बात का श्रेय जाता है कि उन्होंने अफ्रीका की स्वाहिली भाषा में ऋषि के जीवन को प्रस्तुत किया। यह 1953 में प्रकाशित हुआ।

इस विवरण को रमणलाल देसाई लिखित उस प्रसिद्ध निबंध के उल्लेख से समाप्त करना चाहिए जो ऋषि दयानन्द के मूल्यांकन में अत्यन्त भावप्रवण शैली में लिखा गया था। इसकी उन पंक्तियों को प्रायः उद्धृत किया है जिसमें ऋषि दयानन्द के व्यक्तित्व की विशालता को भाव स्फूर्ति शैली में उभारा गया है। वस्तुतः यह एक व्याख्यान था जो देसाई द्वारा गुरूकुल रूप में दिया गया था। रमणलाल देसाई अपनी औचारिक कृतियों के कारण विख्यात हैं। उपर्युक्त पंक्तियों में गुजराती के लिखे आर्य वैदिक साहित्य की एक संक्षिप्त झांकी मात्र प्रस्तुत की गई है।

शंकर कालोनी, श्रीगंगानग

☞ पृष्ठ 8 का शेष

ऋषि अर्पण

'प्रार्थना और उपासना' सामान्य लेख है। लेखक कर्मफल के सिद्धान्त पर अपना एक अलग दृष्टिकोण रखता है। लेख के अन्त में उसका निष्कर्ष है, 'मेरी समझ में तो कर्मफल सिद्धान्त और पाप, पुण्य की अवधारणा मनुष्य की मूल दुर्दमनीय प्रवृत्तियों काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर पर नियंत्रण लगाने का मनीषियों द्वारा विचारा हुआ आयोजन है; जिससे मानव का जीवन, पशु जीवन से पृथक होकर एक वैशिष्ट्य को प्राप्त करके सह-अस्तित्व, प्रेम, भाई चारे और विश्वशान्ति का कारण बने।'

'कुरआन का अल्लाह! वेद का ईश्वर' तथा 'ईसा की राह-रसूल की राह-वेद की राह' दोनों लेख मौलिक तथा पठनीय हैं। वेद में ईश्वर का स्वरूप बता चुके हैं। कुरआन में अल्लाहताला के साथ रसूल को भी सम्मिलित कर लिया गया है। अल्लाहताला और उसके रसूल पर जो ईमान न लाए वह कत्ल करने देने योग्य है। कत्ल से कुफ्र बुरा है। यह तो ज्यादती का क्लाइमैक्स है। सभी प्राणियों के कर्मों का फल एक दिन में देने की बात भी गले नहीं उतरती। कर्म फल देने में सिफारिश की बात भी ठीक नहीं है। महर्षि दयानन्द ने सन् 1877 में कहा था, 'सब धर्मों, मजहबों, पन्थों के स्वीकार्य मूलभूत सिद्धान्तों में जिसमें मानव कल्याण की सर्वजनीन हित साधना हो एक मत होकर स्वीकार करें और मिल जुलकर कार्य करें। विरोध के मुद्दों को सुलझने के लिए भविष्य पर छोड़ दें। विश्वशान्ति के लिए यह एक अच्छा सुझाव है।' आगे तीन लेख 'भ्रष्टाचार', समलैंगिकता-यौन विकृति या बीमारी तथा 'भारत गल रहा है', सामाजिक सरोकार से सम्बन्धित हैं। लेखक के अनुसार भ्रष्टाचार विश्वव्यापी रोग है। अरबों डालर काले धन के रूप में उन राष्ट्रों की बैंकों में व्यक्तिगत खातों में जमा है जिनकी कानून व्यवस्था उनके काले धन को सुरक्षित रखने के लिए वचनबद्ध है। भारत विश्व के दस भ्रष्टतम देशों में है। लेखक के अनुसार भारत में रिश्वत देना मजबूरी है। बच्चे का जन्म प्रमाण पत्र लेना हो, बाप का मृत्यु प्रमाण पत्र लेना हो तो रिश्वत देनी पड़ेगी। अन्यथा चक्कर काटते रहिए। देश में जीप सौदा करना हो या बोफोर्स तोपों का सौदा करना हो, शहीदों के लिए ताबूत खरीदने का मामला हो, रिश्वत लेना दलाली लेना तो जन्म सिद्ध अधिकार है ही। अपना और पार्टी का खर्च चलाना है, रिश्वत लेना और देना तो चलता रहेगा। कोई सिरफिरा रोकने की कोशिश करेगा तो वह उस पद पर नहीं रहेगा चाहे वह पद बाबू का हो अथवा मंत्री का। सभी खाद्य पदार्थों में मिलावट करना, दूध, घी आदि में मिलावट करना भी व्यापारी का अधिकार बन गया है। उसे जन स्वास्थ्य से कोई लेना-देना नहीं है। दवाईयाँ भी नकली बन रही हैं। समलैंगिकता जो एक यौन विकृति है बीमारी है, उसे भी भारत में उच्चतम न्यायालय ने वैध घोषित कर दिया है। सार्वदेशिक आर्य समाज के अध्यक्ष स्वामी अग्निवेष ने भी अपनी स्वीकृति दे दी है। वास्तव में अब 'भारत गल रहा है'। दिनों दिन क्षीण हो रहा है। इसे रोकने का कारगार उपाय करना ही होगा। फिर पाँच विविध लेख हैं। पहले लेख में लेखक ने अपनी वाराणसी और प्रयाग की यात्रा का वर्णन किया है। स्वामी दयानन्द जहाँ-जहाँ गए हैं वहाँ-वहाँ जाकर लेखक ने उन स्थानों का स्वामी दयानन्द से सम्बन्ध जोड़ते हुए संक्षिप्त वर्णन किया है। कुछ समय पूर्व श्री सतीश कुमार अरोड़ा, सिविल जज की अदालत में एक मुकदमा पंजीबद्ध कराकर सत्यार्थ प्रकाश के मुद्रण, प्रकाशन एवं वितरण पर रोक लगाने की माँग की गई है। क्योंकि इसके चौदहवें समुल्लास में कुरआन मजीद की आलोचना की गई है। इससे यह लाभ होगा कि सार्वदेशिक आर्य समाज के तीनों गुट एक साथ आकर न्यायालय में अपना पक्ष प्रस्तुत करेंगे। केस दायर करने वाले क्या यह नहीं जानते कि लाहोर आर्य समाज की स्थापना डा. रहीम खाँ की कोठी में स्वयं महर्षि दयानन्द के हाथों हुई थी। इसके उपलक्ष में ईश्वरोपासना तथा हवन भी हुआ था। स्वामीजी उनकी कोठी में साढ़े तीन माह तक रहे भी और वहीं आर्य समाज के नियम उपनियम बनाए। फिर वे अमृतसर गए और मियाँ जान मोहम्मद की कोठी पर ठहराए गए। वहीं पर आर्य समाज अमृतसर की स्थापना हुई। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के संस्थापक सर सैयद अहमद खाँ जब प्रथम बार महर्षि से मिलने पहुँचे तो महर्षि ने उन्हें सम्मान पूर्वक अपने पास बैठने का संकेत किया, सर सैयद अहमद खां ने कहा कि हमारी जगह तो पीरों और फकीरों के कदमों में है और वे नीचे ही बैठे। क्या उन्होंने चौदहवाँ समुल्लास नहीं पढ़ा था। अगले तीन लेखों में आर्य समाज की वर्तमान दुर्दशा का वर्णन है माफिया ग्रुपों ने अधिकांश आर्य समाजों को अपने नियंत्रण में ले लिया है। मैं लेखक के कथन का नमूना हूँ। जिसने जीवन भर आर्य समाज के लिए कार्य किया उसे आर्य समाज भवन से निकालने के लिए दो बार पुलिस को बुलाया गया। आर्य समाज अधिक बदनाम न हो इसलिए मैंने आर्य समाज जाना बन्द कर दिया है। अगले दो लेख भगवान् श्रीकृष्ण से सम्बन्धित हैं और उन्हें इस संग्रह के सर्वश्रेष्ठ लेख माना जा सकता है।

मैं श्री अभिमन्यु कुमार खुल्लर को 'ऋषि अर्पण' की रचना के लिए बधाई देता हूँ और आर्य जनता से इसका अध्ययन करने की अपील करता हूँ इति।

शिवनारायण उपाध्याय
73 शास्त्री नगर, दादाबाड़ी
कोटा (राजस्थान)324009

www.thearyasamaj.org

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11/6066/2012-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103/2012-14
POSTED AT N.D.P.S.O. ON 13-14 /11/2013
रजिस्ट्रेशन नं. आर० एन० आई० 39/57

डी.ए.वी. वेलाचेरी, (चेन्नई) में गांधी जयंती समारोह

गांधी जी के नैतिक मूल्य जैसे सत्य और अहिंसा का संदेश देने हेतु डी.ए.वी.पब्लिक स्कूल वेलाचेरी में गांधी जी की 144 वीं जयंती एवं अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस आयोजित किया गया। स्कूल के प्रांगण में विद्यालय के छात्रों ने गांधी जी के संपूर्ण जीवन को विभिन्न रूपों में प्रस्तुत किया।

छात्रों ने समता एवं भाईचारे के संदेश से ओत-प्रोत "वैष्णव जन तो तेने कहिये" भजन का सस्वर गायन किया, जिसने पूरे वातावरण को मंत्रमुग्ध कर दिया। सूत्रों को बच्चों ने **कव्वाली** के रूप में प्रस्तुत किया।

सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलने वाले अलग-अलग देशों के नेताओं को अभिनय द्वारा प्रस्तुत किया गया। **नुक्कड़ नाटक** के रुप में गांधी जी के जीवन शैली और उनके कार्यो का सजीव एवं मर्मस्पर्शी चित्रण प्रस्तुत किया गया। **वाद-विवाद** के द्वारा गांधी जी के आदर्शों की महत्ता को उजागर किया गया।

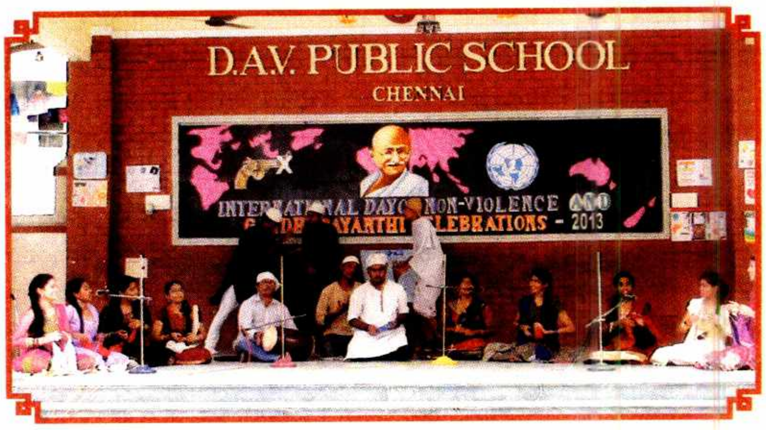

डी.ए.वी. जींद में सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध जन-जागरण

डी.ए.वी. प. स्कूल जींद में 'लिटरेसी क्लब' द्वारा सामाजिक बुराइयों पर आधारित एक लघु नाटिका प्रस्तुत की गई जिसका उद्देश नारी शोषण, लिंगानुपात आदि समाजिक बुराइयों के प्रति विद्यार्थियों को जागृत करना था। डी. ए. वी. प. स्कूल जींद के प्राचार्य श्रीमान हरेशपाल पांचाल जी के नेतृत्व में यह लिटरेसी क्लब समय - समय पर सामाजिक कार्यो के प्रति तथा समाज में फैली बुराइयों को समाप्त करने में अपना सहयोग देता रहता है। इस क्लब की अध्यक्षा श्रीमती रीमा वालिया एवं श्रीमती भारती सतीजा के अथक प्रयास से यह क्लब गरीब बच्चों की सहायता हेतु पुस्तकें व कापियां आदि भी वितरित कर परोपकार के कार्यो में सहर्ष अपनी भूमिका निभाता है। उपरोक्त नाटिका के सुन्दर विषय व सुन्दर प्रस्तुति पर प्राचार्य महोदय द्वारा प्रतिभागी विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया गया तथा सहयोगी शिक्षकगण को बधाई दी गई।

डी.ए.वी. खेड़ा खुर्द के अंकित मिश्रा और निकिता पोरिया हुए सम्मानित

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल खेड़ा खुर्द दिल्ली के विद्यार्थियों ने राज्य क्षेत्रीय विज्ञान प्रदर्शनी और मेला 2013-14 जो शिक्षा निर्देशालय विज्ञान केंद्र ने आयोजित किया, में भाग लिया और उसके चारों मॉडलों का चार विभिन्न वर्गों में चयन हुआ। प्रियंका राणा और दीया मान कक्षा पाँचवीं को प्राथमिक विज्ञान वर्ग में, आस्था गर्ग और निधि शर्मा कक्षा नवम् और शिवानी मान और निखिल मान कक्षा दसवीं का चयन पर्यावरण एवं स्वास्थ्य वर्गों के अंतर्गत हुआ।

अंकित मिश्रा एवं निकिता पोरिया का चयन राजकीय स्तर पर हुआ और उन्हें ट्रॉफ़ी से सम्मानित किया गया।

विद्यालय कि प्रधानाचार्या श्रीमती देविका दत्त ने विद्यार्थियों को और विज्ञान की अध्यापिकाओं श्रीमती ज्योत्सना, जयमाला एवं नीलम शर्मा को तथा अभिभावकों बधाई देते हुए भविष्य के लिए शुभकामनाएँ दीं।

संसार की अमरता

बोलचाल में बहुधा कहा जाता है कि संसार नश्वर है और आत्मा अमर है। वास्तव में संसार की कोई वस्तु भी नश्वर नहीं है। सब अमर है। वो रूप बदलती रहती है। पानी भाप और बर्फ बन जाता है पर नष्ट नहीं होता है। लकड़ी से राख और एनर्जी निकल जाती है पर नष्ट नहीं होती है। विज्ञान का सिद्धान्त है कि पदार्थ न बनाया जाता है न नष्ट किया जाता है।

इस प्रकार संसार अमर है पदार्थ अमर है और आत्मा भी अमर है। यह कहना कि मनुष्य मर गया है। गलत है, सही तो यह है कि मनुष्य नया जन्म लेता है। कहा गया है कि पुनर्पि जनमनं, पुनर्पिमरणं। पुनर्पि जठराग्नि शयनं।

हम आदिकाल से ही बारबार जन्म लेते आये हैं और लेते रहेंगे। इस क्रम को संसार की कोई ताकत नहीं रोक सकती।

प्रत्येक नये जन्म के साथ पूर्वजन्म के कर्म और संस्कार रहते हैं। इसी आधार पर मैं कहता हूँ मैं और आप सब रामायण और महाभारत काल में और उसके बाद भी थे और आगे भी रहेंगे।

-जगमोहन मित्तल
शनी बाज़ार, बीकानेर (राजस्थान)

मुद्रक व प्रकाशक - **श्री प्रबोध महाजन,** सभा मंत्री द्वारा **मदन गोयल** के प्रबंध में **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू-30, ओखला, फेस-II, नई दिल्ली-110020 (दूरभाष : 26388830-32) से मुद्रित कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। स्वामित्व - आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 (दूरभाष : 23362110, 23360059) सम्पादक - **श्री पूनम सूरी**